हरिभूमि

महेन्द्रगढ़-नारनौल भूमि

रोहतक, रविवार, 16 मार्च 2025

11 समाज की एकता में संवर्धन करता है होली का...

12 बोचड़िया गांव में प्रवासी राजमिस्त्री की पत्नी के साथ मारपीट...

MR SCHOOL Affiliated to CBSE
MITTERPURA | ATELI
A Name of Dedication, Hardwork and Sincerity
।। तमसो मा ज्योतिर्गमय ।।
कोटा की FACULTY अब MR SCHOOL ATELI में
JEE / NEET COACHING with KOTA Faculty Experts
ADMISSION OPEN Session 2025-26
अब MR में स्कूल व कोचिंग साथ-साथ
SAMBHAV CLASSES
VI to X Foundation Classes
XI to XII JEE / NEET
Special Coaching for CLAT / NDA CA-CPT OLYMPIAD
MITTERPURA, NARNAUL (HR.) 9466945658, 9416903367 mrps530543@gmail.com www.mrpublicschool.com
NARNAUL ROAD, ATELI MANDI 8278085868, 9416903367 mrpsateli@gmail.com www.mrpsateli.in

अकबरपुर स्कूल ने 75 वर्ष किए पूरे

ऐसा सरकारी स्कूल जहां थे स्टाफ क्वार्टर भी, अब लड़ रहा अस्तित्व की लड़ाई

- आसपास 20 गांव के बच्चे आते थे पढ़ाई करने कांवी से दो नदी पार कर पहुंचते थे विद्यार्थी
- इस स्कूल से आईएएस, नेता, मंत्री, वकील डॉक्टर, व्यापारी, किसान, शिक्षक, प्रवक्ता प्राचार्य, सेनाधिकारी व अनेक व्यवसाय से जुड़े लोग कर रहे राष्ट्र सेवा

सतीश सैनी ⏭ नारनौल

स्वतंत्रता प्राप्ति के तुरंत बाद जब देश संक्रमण काल से गुजर रहा था, राष्ट्र के कर्णधारों के लिए राष्ट्रनिर्माण एक चुनौती बनी हुई थी, देश की राजधानी और प्रान्त की राजधानी से सैकड़ों मील दूर एक अदने से गांव में एक दिया जलाकर चमन को रोशन करने का प्रयास किया गया। पेप्सू सरकार के तत्कालीन शिक्षामंत्री चौधरी निहाल सिंह तक्षक ने 17 मई 1949 को जिला महेंद्रगढ़ के गांव अकबरपुर में प्राथमिक विद्यालय की नींव रखी। लगभग एक वर्ष बाद ही यह विद्यालय बनकर तैयार हुआ और 16 मार्च 1950 को तत्कालीन पेप्सू सरकार के मुख्यमंत्री सरदार ज्ञान सिंह रारेवाला ने इसका उद्घाटन किया।

आज राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय अकबरपुर की स्थापना को 75 वर्ष पूरे हो चुके हैं। 75 वर्षों पूर्व जिन उद्देश्यों, जिन सपनों, जिन मूल्यों को लेकर इस विद्यालय की स्थापना की गई थी, अपने कार्यकाल में स्कूल ने वह सब साकार किए।

प्राथमिक विद्यालय से आरम्भ होकर अकबरपुर स्कूल में वरिष्ठ माध्यमिक स्तर तक का सफ़र तय किया है। आजादी के तुरंत बाद शिक्षा व्यवस्था स्थापित करना, नागरिकों को शिक्षा के साधन उपलब्ध कराना भी एक चुनौती था। उस दौर में स्थानीय प्रतिनिधियों से लेकर राज्य के मुख्यमंत्री तक ने गांव अकबरपुर में शिक्षा के केंद्र को स्थापित करना बहुत कल्याणकारी कदम था।

नारनौल। अकबरपुर स्कूल का पुराना भवन। फोटो : हरिभूमि

क्षेत्र के शिक्षा स्तर की वृद्धि में अकबरपुर स्कूल का बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जब स्कूल खुलना ही एक सपना होता था, उस दौर में विद्यालय की स्थापना होना और स्तरीय शिक्षा प्रदान करना वास्तव में एक चुनौती रहा होगा। अकबरपुर, तोताहेड़ी, सिलारपुर, नांगल पीपा, भुंगारका, भोजावास, कांवी, नंगली, कमानिया, छापड़ा, खातौली जाट, खातौली अहीर, अकोली, ढाणी मामराज, खानपुर व ढाणी बाठोठा और अन्य गांवों के विद्यार्थी यहां शिक्षा ग्रहण करने आते थे। स्कूल प्रशासन की गुडविल और उत्कृष्टता का आलम यह था कि स्कूल विद्यार्थियों से खचाखच भरा रहता था। संसाधनों का अभाव, फर्नीचर की कमी भी क्षेत्र के लोगों की शिक्षा के प्रति लग्न को रोक नहीं पाई।

यहां पढ़ने वाले विद्यार्थियों ने हासिल किया बेहतर मुकाम

वर्षों के सफ़र में स्कूल ने अनेक उतार चढ़ाव देखें है। वह दौर भी देखा जब स्कूल के कमरों में बैठने की जगह नहीं होती थी और अब यह दौर भी देखा जब स्कूल अपने आस्तित्व की लड़ाई लड़ रहा है। विद्यालय के पूर्व विद्यार्थी एवं पूर्व आईएएस विनय यादव ने हरिभूमि को बताया कि वह अकबरपुर स्कूल के ही प्रोडेक्ट है। वह कांवी से शुरूआत में पैदल और बाद में साइकिल से अकबरपुर स्कूल गए। उस वक्त गणित के महेंद्र व हिंदी के शिक्षक श्रीराम हुआ करते थे, काम नहीं करने पर पिटाई भी होती थी। प्रार्थना सभा में ही एक एक करके विद्यार्थियों से कुछ ना कुछ बोलने को कहा जाता था, ताकि झिझक खुले। यहां पढ़ने वाले बच्चों के लिए जो उनसे होगा, वह करेंगे। वहीं मार्केट कमेटी के सेवानिवृत कार्यकारी अधिकारी मुरारीलाल शर्मा बताते हैं कि अकबरपुर स्कूल अपनी बेहतर पढ़ाई के लिए प्रसिद्ध होता था। हम गांव कांवी से पैदल ही चलकर आते थे और रास्ते में दो बार नदी पार करते थे। स्कूल दिनों को याद करते हुए बनवारी लाल एडवोकेट बताते है कि उन दिनों अकबरपुर स्कूल में टोलियां ही टोलियां आती थी। अध्यापक बहुत परिश्रमी होते थे। खेलों में भी यह अव्वल स्थान रखता था। कबड्डी, वॉलीबॉल जैसे खेल विद्यार्थी बड़े चाव से खेलते थे। उस समय यहां टीचिंग स्टाफ और चतुर्थ श्रेणी स्टाफ के लिए स्टाफ क्वार्टर तक बने हुए थे। पीने के पानी के लिए स्कूल परिसर में कुआं था, जिसमें मोटर लगी हुई थी।

जहां पिता या खुद पढ़े, अब वहां शिक्षक

विद्यालय में कार्यरत राजीनीति विज्ञान के प्रवक्ता डॉ. संजय शर्मा कहते हैं कि डायमंड जुबली मना रहे स्कूल में सेवाएं देने का कार्य सौभाग्य से प्राप्त होता है। उनके लिए तो अकबरपुर स्कूल में सेवाएं देना और भी फर्क का विषय है, क्योंकि उनके पिता, चाचा और ताऊ कभी इसी स्कूल के छात्र रहे हैं। कांवी वासी रिटायर आईएएस एवं पूर्व सिंचाई मंत्री डा. अभय सिंह यादव भी इसी स्कूल के विद्यार्थी रहे है। वर्तमान में अकबरपुर स्कूल में कार्यरत हिंदी प्रवक्ता अभय सिंह यादव अपने छात्र जीवन में इसी विद्यालय के विद्यार्थी रहे हैं। जिस स्कूल के छात्र रहे हैं, वहां अध्यापक के रूप में सेवाएं देना भी गर्व का विषय है। स्कूल आजकल भले ही जर्जर हो चला है किन्तु उसके द्वारा समाज को दिए गए हीरे पूरी दुनिया को रोशन कर रहे हैं।

खबर संक्षेप

सड़क दुर्घटना में बाइक चालक की मौत

मंडी अटेली। नारनौल-रेवाड़ी नेशनल हाईवे पर गोकलपुर रेस्ट एरिया के समीप शुक्रवार रात्रि को सड़क दुर्घटना में एक बाइक चालक की मौत हो गई। अटेली पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम करवा कर परिजनों को सौंप दिया। अटेली दुर्घटना के कारणों की पड़ताल कर रही है। उक्त मार्ग पर राजस्थान के झुंझुनूं जिले के जमालपुर (टीबा बसई) निवासी 36 वर्षीय दाताराम बाइक से गोकलपुर के पास दुर्घटनाग्रस्त हो गया। अटेली पुलिस को जानकारी मिलने मौके पर पहुंची तथा आवश्यक कार्रवाई शुरू की। मृतक के भाई धूड़ाराम के बयान पर पुलिस अग्रिम कार्रवाई रही है। पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम करवा कर स्वजनों को सौंप दिया।

एमएम बारिश के बाद बढ़ी ठंड

कनीना। शुक्रवार रात्रि तेज हवा व बादलवाई के बीच हुई पांच एमएम बारिश के बाद ठंड का एहसास हुआ है। वहीं रबि फसलों को फायदा हआ है। बृहस्पतिवार को भी दिनभर ठंडी हवा बह रही थी तथा सायं के समय गांव बागोत, पोता, उच्चत, नोताना में ओलावृष्टि भी हुई थी। बता दें कि कनीना ब्लाक में करीब 32 हजार हेक्टेयर कृषि योग्य भूमि है। जिसमें से मुख्यतः 19500 हेक्टेयर भूमि पर सरसों, 9500 हेक्टेयर रक्बे में गेहूं फसल की बिजाई की गई थी। सरसों की कटाई शुरू कर दी गई है। जिसके लिए प्रवासी मजदूर खेतों में डटे हुए हैं। मौसम के करवट लेने के बाद गेहूं की फसल को फायदा हुआ है। कृषि विभाग के एसडीओ डा. अजय कुमार ने बताया कि रविवार को भी मौसम बूंदाबांदी वाला रह सकता है। जिससे तापमान में गिरावट रहेगी। मौसम ठंडा रहने से रबि फसल में लाभ होगा।

पुलिस ने युवक से बरामद की स्मैक

कनीना। थाना पुलिस टीम ने छापेमारी कर एक व्यक्ति से 1.60 ग्राम स्मैक बरामद की है। इस बारे में सदर थाना इंचार्ज निरीक्षक मुकेश कुमार ने बताया गुप्त सूचना के आधार पर पुलिस ने बवानिया बचीनी मार्ग पर दबिश दी। जहां एक युवक को काबू कर पूछताछ की। ड्यूटी मैजिस्टेट ईटीओ विक्रांत यादव की उपस्थिति में कागजी कार्रवाई पूरी कर युवक की तलाशी ली गई। जिसमें एक पॉलीथिन मिली। जिसकी जांच की गई तो उसमें 1.60 ग्राम स्मैक मिली। आरोपित की पहचान विकास उर्फ रूंढा निवासी बचीनी थाना कनीना के रूप में हुई।

आरपीएफ चौकी इंचार्ज बोले: शिकायत पर आरोपी को पूछताछ के लिए रोकने का किया गया था प्रयास

आरपीएफ चौकी इंचार्ज पर लगाया मारपीट का आरोप

- शिकायतकर्ता पर भी केस
- शिकायतकर्ता के आरोप है निराधार, ट्रेन में चढ़ते समय आरोपी को आई थी चोटें, घटना के समय नहीं हुई कोई बातचीत

हरिभूमि न्यूज ⏭ महेंद्रगढ़

जिले के गांव बेरी निवासी एक व्यक्ति महेंद्रगढ़ आरपीएफ चौकी इंचार्ज पर पैसे छीनने तथा मारपीट का आरोप लगाते हुए सिटी थाना पुलिस को शिकायत दी है। सिटी थाना पुलिस ने शिकायतकर्ता की शिकायत पर आरपीएफ चौकी इंचार्ज के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

पुलिस को दी शिकायत में गांव बेरी निवासी दलीप सिंह ने बताया कि वह मिनिट्री आफ डिफेंस में कार्यरत है तथा उसकी ड्यूटी दिल्ली के आरके पुरम में है। 10 मार्च को करीब सुबह 2.50 बजे अपनी ड्यूटी पर जाने के लिए महेंद्रगढ़ रेलवे स्टेशन पर आया था। वह दो साल से अपनी मोटरसाइकिल को अपने रिश्तेदार की अनुमति से रेलवे स्टेशन पर बने रिहायशी क्वार्टर के पास खड़ी है।

उस दिन भी जब वह वहां पर अपनी बाईक खड़ी करके बाहर आया तो दो कर्मचारी ने रोककर उससे पुछताछ शुरू कर दी। उनमें से एक कर्मचारी ने बताया कि वह आरपीएफ चौकी इंचार्ज एसआई रमेश कुमार है।

आरपीएफ चौकी इंचार्ज ने कहा कि वह पिछले छह माह से देख रहा है कि आप अपनी बाईक यहां खड़ी कर रहे है। हर माह 1500 रुपये के हिसाब से नौ हजार रुपये किराया बनता है तथा आपको छह माह का किराया देना होगा। मना करने पर उसने मारपीट शुरू कर दी।

इस दौरान उसने जब अपना आईकार्ड दिखाया तो सेना के प्रति अपमानजनक टिप्पणी की और मारपीट शुरू कर दी। इस दौरान जेब से 4800 से पांच हजार रुपये निकाल लिए। जब वह थोड़ी आगे बढ़ा तो एक जान पहचान वाला व्यक्ति दिख गया। उसने बुलाकर ट्रेन में बैठाया तथा वह अपनी ड्यूटी पर चला गया।

महेंद्रगढ़। रेलवे स्टेशन। फोटो : हरिभूमि

आरपीएफ ने भी किया केस दर्ज

आरपीएफ के चौकी इंचार्ज रमेश कुमार का कहना है कि कॉलोनी को रात के समय बाईक खड़ी करने पर परेशानी हो रही थी। स्टेशन मास्टर की तरफ से भी कॉलोनी में खड़ी करने की शिकायत मिली थी। उनके ऊपर लगाए गए आरोप निराधार है। उस दिन आरपीएफ पुलिस दलीप सिंह का परिचय भी नहीं ले पाई। ट्रेन में चढ़ते समय उसको चोटें आई है। दलीप सिंह के खिलाफ आरपीएफ पुलिस ने सरकारी कार्य में बाधा डालने सहित अन्य धाराओं के तहत 11 मार्च को मामला दर्ज कर लिया था। जबकि आरोपित की ओर से बाद में बचाव के लिए शिकायत दी गई है। शनिवार को आरपीएफ पुलिस दलीप सिंह के घर पर गई थी।

धुलंडी पर दो पक्षों में झगड़ा, अस्पताल में भर्ती घायलों ने डॉक्टरों व स्टाफ के साथ की मारपीट

मंडी अटेली। अस्पताल में भर्ती घायल पक्ष। फोटो : हरिभूमि

मंडी अटेली। अटेली क्षेत्र के गांव कांटी में धुलंडी के दिन दो पक्षों में लड़ाई झगड़ा हो गया, जिसके चलते लगभग एक दर्जन से अधिक लोग घायल हो गए। घायलों को उपचार के लिए सामान्य अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां एक पक्ष ने कुछ लोगों को अस्पताल में बुला लिया और हंगामा शुरू कर दिया। जब ड्यूटी पर मौजूद डॉक्टर व स्टाफ ने उनको रोका तो हंगामा करने वालों ने स्टाफ के साथ भी मारपीट शुरू कर दी। इस बारे में ड्यूटी पर तैनात डाक्टर ने पुलिस में शिकायत दी है। गांव कांटी के दो परिवारों में धुलंडी पर शाम को लड़ाई झगड़ा हो गया। लड़ाई झगड़ा इतना बढ़ गया कि दोनों ही पक्षों के पुरुष व महिला दोनों घायल हो गए। दोनों पक्षों के करीब दस लोग अस्पताल में उपचार के लिए आए। यहां पर एक पक्ष के लोगों ने कुछ युवाओं को बुला लिया। युवाओं ने आते ही दूसरे पक्ष के लोगों से लड़ाई झगड़ा शुरू कर दिया। जिसके चलते अस्पताल में ही हंगामा हो गया। इसकी जानकारी जब वहां मौजूद डॉक्टर प्रतीक व अन्य स्टाफ को लगी तो उन्होंने दोनों पक्षों में बीच बचाव किया। इस पर एक पक्ष के लोगों ने स्टाफ व डॉक्टर के साथ ही लड़ाई शुरू कर दी, जिस कारण एक स्टाफ सदस्य को ज्यादा लगी। डॉक्टर प्रतीक ने जिसकी शिकायत पुलिस थाने में दी, जिसमें उन्होंने लिखा कि शाम को पांच बचकर 40 मिनट पर कुछ लोग लड़ाई झगड़ा कर अस्पताल में आए थे। जब वे इनकी एमएलआर काट रहे थे तो बाहर से आकर कुछ लोगों ने मारपीट शुरू कर दी। इससे अस्पताल को नुकसान पहुंचा। उन्होंने अस्पताल स्टाफ के साथ अभद्र व्यवहार किया तथा देख लेने की धमकी दी। इससे एक स्टाफ को चोट लगी। वहीं महिला स्टाफ के साथ भी गाली गलौच किया। वहीं इस बारे में अटेली मंडी अस्पताल के प्रवर चिकित्सा अधिकारी डा. विजय ने बताया कि उनको अस्पताल में लड़ाई झगड़ा होने की जानकारी मिली है। आज वे बाहर थे, इसलिए पूरा मामला पता नहीं है। वह ड्यूटी पर मौजूद डाक्टर से बात करेंगे।

महेंद्रगढ़। विकास का निरीक्षण करते नपा प्रधान एवं अधिकारी। फोटो : हरिभूमि

दूसरी दवाई पीने से व्यक्ति की मौत

महेंद्रगढ़। गांव ऊंची भांडोर निवासी एक व्यक्ति ने अज्ञात कारणों के चलते खांसी की दवाई की जगह दूसरी दवाई पी ली, जिससे उसकी मौत हो गई। पुलिस ने मृतक का नागरिक अस्पताल में शव का पोस्टमार्टम करवा परिजनों को सौंप दिया। गजेंद्र सिंह ने पुलिस में दिए बयान में बताया कि वह मेहनत मजदूरी का काम करता है। हम परिवार सहित कुएं पर रहते हैं। 13 मार्च की रात को उसके पिता अपने कमरे में सोए हुए थे। जिनकी तबीयत खराब रहती थी। उसके पिता नरेंद्र खेती करते थे। पिता ने अंधेरा होने के कारण खांसी की दवाई की जगह दूसरी दवाई पी ली। जिससे उसके पिता की तबीयत बिगड़ गई। उसको अपने परिवार सहित महेंद्रगढ़ के एक निजी अस्पताल में लेकर आए। जहां डॉक्टर ने प्राथमिक उपचार के बाद ज्यादा तबीयत ज्यादा खराब होने के कारण उसके पिता को हायर सेंटर रेफर कर दिया। जो वह पिता को सरकारी अस्पताल महेंद्रगढ़ में लेकर आए। जहां पर डॉक्टरों ने प्राथमिक जांच के बाद पिता नरेंद्र को मृत घोषित कर दिया।

रेलयात्रियों के लिए खुशखबरी

उत्तराखंड के टनकपुर से अजमेर के दौराई के लिए नई ट्रेन का संचालन, नारनौल में होगा ठहराव

- ट्रेन से रेवाड़ी व गुरुग्राम के लोगों को भी होगा फायदा होगा

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

रेलयात्रियों के लिए खुशखबरी है। उत्तर पश्चिमी रेलवे ने उत्तराखंड के टनकपुर से अजमेर के दौराई के लिए नई रेलसेवा का संचालन शुरू कर दिया है। नारनौल शहर पहली बार सीधा उत्तराखंड से जुड़ गया है। यहां के लोगों को अब सीधी उत्तराखंड व उत्तर प्रदेश के लिए ट्रेन मिल जाएगी। इस ट्रेन से रेवाड़ी व गुरुग्राम के लोगों को भी फायदा होगा। उत्तर पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी कैप्टन शशि किरण के अनुसार गाड़ी संख्या 15092 टनकपुर (दौराई) अजमेर सप्ताह में चार दिन नई रेलसेवा 30 मार्च से टनकपुर से प्रत्येक सोमवार, बुधवार, शुक्रवार व रविवार को 18:20 बजे रवाना होकर अगले दिन 13:55 बजे दौराई पहुंचेगी।

नपा प्रधान ने अधिकारियों के साथ विकास कार्यों का किया निरीक्षण

- 7 करोड़ की लागत से शहर में बनाई जाएंगी 35 सड़क, कुछ स्थानों पर सड़क निर्माण हो चुका है शुरू

हरिभूमि न्यूज ⏭ महेंद्रगढ़

नपा चेयरमैन व अधिकारियों ने शनिवार को शहर में करीब 7 करोड़ रुपये की लागत बनने वाली विभिन्न निर्माण कार्यों का निरीक्षण किया। रमेश सैनी ने कहा कि शहर की नई सरकार बने हुए लगभग 3 वर्ष का समय हो गया है, लेकिन अभी तक शहर के विकास कार्य न के बराबर हुए हैं, लेकिन अब शहर में विकास कार्य होने की उम्मीद जगी है। नपा प्रधान रमेश सैनी ने बताया कि शहर के अंदर लगभग 7 करोड़ की लागत से 35 गलियों में विकास कार्य शुरू होने जा रहे हैं, जिसमें कुछ स्थानों पर कार्य शुरू हो चुके हैं तथा कुछ स्थानों पर 10 दिन में निर्माण कार्य शुरू हो जाएंगे। शहर का प्रमुख सड़क मार्ग मसानी चौक से 11 हट्टा बाजार होते हुए कॉलेज मोड़ तक जो काफी वर्षों से जर्जर हो चुकी है। उस पर भी सड़क निर्माण कार्य जल्द ही शुरू होने वाला है, जिसकी सभी औपचारिकताएं पूर्ण कर ली गई है। जिसमें करीब दो करोड़ 67 लाख रुपये की लागत आएंगी। नपा प्रधान रमेश सैनी ने अधिकारियों के साथ नगर के विभिन्न वार्डों में चल रहे विकास कार्यों का निरीक्षण कर संबंधित ठेकेदारों व अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश देते हुए कहा कि सड़क निर्माण में क्वालिटी के साथ किसी भी प्रकार का समझौता नहीं किया जाएगा। शहर में लगभग एक करोड़ की लागत से स्ट्रीट लाइट लगाने का कार्य भी शुरू किया जा रहा है। जबकि शहर की सफाई व्यवस्था को सुचारू रूप से करने के लिए लगभग 23 करोड रुपए का एस्टीमेट बनाकर हेड आफिस में भेजा जा चुका है, जिसकी अप्रूवल जल्द ही मिलने वाली है।

प्रदेश के पूर्व स्वास्थ्य मंत्री राव नरेंद्र सिंह ने मुख्यमंत्री व नगर निकाय मंत्री को भेजा पत्र

आमजन की आवाज को अब विपक्ष ने की बुलंद, बाजार में सड़क निर्माण जल्द हो पूरा

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

शहर के मुख्य बाजार में सड़क सड़क तोड़ने के बाद निर्माण नहीं हो रहा। हालात यह है कि नाली व सीवरेज का गंदा पानी टूटी सड़क पर बह रहा है। इस वजह से ग्राहक दुकानों पर नहीं जा रहा। इससे सैकड़ों दुकानदारों का व्यापार ठप हो गया है। ऐसा भी नहीं है कि नगर परिषद प्रशासन बेखबर है। बावजूद निर्माण कार्य में देरी हो रही है। इससे व्यापारी सहित आमजन में नाराजगी देखी जा रही है। अब विपक्ष भी सामने आ गया है और नगर परिषद प्रशासन की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाते हुए सीएम व नगर निकाय मंत्री के पास शिकायत भेजी है।

राव नरेंद्र सिंह

इस संबंध में प्रदेश के पूर्व स्वास्थ्य मंत्री एवं नारनौल से विधायक रहे राव नरेंद्र सिंह ने शिकायत की है। इस शिकायत में उन्होंने कहा है कि नारनौल शहर के मुख्य बाजारों में बिना किसी प्लान के रोड बनाने का कार्य चलाया हुआ है। जिससे शहर के मुख्य बाजार के व्यापारियों व आमजन में इसका विरोध होना शुरू हो गया है। कई माह माह बीत जाने के बाद भी सड़क का कार्य किसी भी स्तर पर नहीं हुआ है। केवल ओर केवल सड़क को खोदकर जगह जगह खड्डे आदि कर दिए गए है। जिससे मुख्य रूप से पुल बाजार से लेकर आजाद चौक व किला रोड तक, गर्ल्स आईटीआई से लेकर महिला थाना तक और इसके साथ पेयजल सप्लाई टूट चुकी है। सीवर लाइन भी अस्त व्यस्त कर दी गई है। जिससे आमजन को बाजार में आने जाने में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है

निर्माण न होने से व्यापार हो रहा प्रभावित

डेढ़ माह पहले मुख्य बाजार की तोड़ी थी सड़क, दुकानदार परेशान

नारनौल। 14 मार्च को प्रकाशित समाचार।

या यूं कहें कि कई माह से व्यापारियों को काफी आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ा रहा है क्योंकि राहगीरों को बाजार में पैदल आने जाने में दिक्कत हो रही है। जगह जगह कीचड़ फैल रहा है। वाहन पर तो क्या आमजन पैदल भी बाजार के अंदर आ जा नहीं सकता। इस सड़क बनाने के कार्य के कारण सभी व्यापारियों का सीजन (त्यौहार, शादी आदि) खराब हो गया।

नगर परिषद को चाहिए था कि टुकड़ों में ठेकेदार से कार्य करवाएं। थोड़ी थोड़ी दूर तोड़कर उसे बनाना चाहिए था लेकिन ठेकेदार ने या नगर परिषद ने ऐसा ना करवा कर एक साथ आधे से ज्यादा बाजार के रोड को तोड़ दिया और कई माह बीत जाने के बाद भी अभी तक एक भी टुकड़ा पूर्ण नहीं करवा पाए है जिससे व्यापारियों में रोष का माहौल बना हुआ है। उनकी मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी व शहरी स्थानीय नगर निकाय एवं आवास मंत्री विपुल गोयल को पत्र भेजकर मांग है कि इस मामले को संज्ञान में लेते हुए इस पर त्वरित कार्यवाही करते हुए संबंधित विभाग को उचित आदेश दें ताकि यह कार्य जल्द से जल्द पूर्ण हो सके।

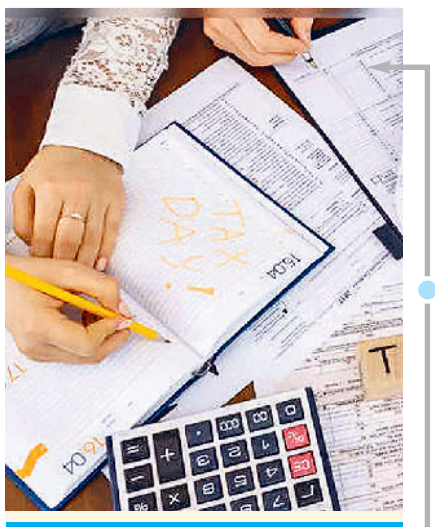

जल्द पूरे कर लें टैक्स से जुड़े कुछ जरूरी काम वरना लगेगा जुर्माना

सुझाव | बिजनेस डेस्क

मार्च का महीना समाप्त होने वाला है और इसके साथ ही वित्तीय वर्ष 2024-25 (वित्त वर्ष 25) भी अपने अंतिम चरण में है। इस महीने के खत्म होते ही कई टैक्स से जुड़ी अहम समय-सीमाएं भी पूरी हो जाएंगी, जिनमें टीडीएस भुगतान, आईटीआर फाइलिंग और अन्य टैक्स दायित्व शामिल हैं। ऐसे में किसी भी तकनीकी गड़बड़ी या पेनल्टी से बचने के लिए समय पर सभी टैक्स संबंधित कार्य पूरे कर लेना बेहद जरूरी है। टैक्सपेयर्स के लिए जरूरी है कि वे महत्वपूर्ण टैक्स डेडलाइंस पर नज़र रखें, जिससे सभी दायित्वों को सही समय पर पूरा किया जा सके और अंतिम समय की परेशानी से बचा जा सके। मार्च में कई अहम टैक्स डेडलाइंस हैं, जिन पर ध्यान देना जरूरी है। मार्च 2025 में कई अहम टैक्स डेडलाइन्स आ रही हैं, जिनका पालन करना जरूरी है। समय पर टैक्स भरने से पेनल्टी और अन्य दिक्कतों से बचा जा सकता है। इस रिपोर्ट में जानते हैं इस महीने की प्रमुख टैक्स समय-सीमाएं।

15 मार्च: एडवांस टैक्स और फॉर्म 24 जी

असेसमेंट ईयर 2025-26 के लिए एडवांस टैक्स की चौथी और आखिरी किस्त भरने की अंतिम तारीख 15 मार्च है। जो टैक्सपेयर्स प्रेजम्पटिव टैक्सेशन स्कीम (सेक्शन 44एडी/44एडीए) के तहत आते हैं, उन्हें पूरे साल का एडवांस टैक्स 15 मार्च तक भरना होगा। सरकारी दफ्तरों को, जिन्होंने फरवरी में बिना चालान के टीडीएस/टीसीएस काटा है, उन्हें इस दिन तक फॉर्म 24जी जमा करना होगा।

17 मार्च: टीडीएस सर्टिफिकेट

सेक्शन 194-आईए, 194-आईबी और 194एस के तहत जनवरी 2025 में काटे गए टीडीएस का सर्टिफिकेट जारी करने की आखिरी तारीख 17 मार्च है।

30 मार्च: चालान-कम-स्टेटमेंट

फरवरी 2025 के लिए सेक्शन 194-आईए, 194-आईबी, 194एम और 194एस के तहत काटे गए टैक्स की रिपोर्टिंग चालान-कम-स्टेटमेंट के जरिए करनी होगी। इसकी अंतिम तारीख 30 मार्च है।

31 मार्च: फॉर्म 3सीईएडी, फॉर्म 67 और अपडेटेड आईटीआर

-फॉर्म 3सीईएडी : मल्टीनेशनल कंपनियों को फाइनेंशियल ईयर 2023-24 के लिए कंट्री बाई कंट्री फाइल करनी होगी। यह रिपोर्ट पैरेंट एंटिटी या भारत में किसी अल्टरनेटिव रिपोर्टिंग एंटिटी द्वारा सबमिट की जा सकती है। अगर पैरेंट एंटिटी सेक्शन 286(2) के तहत छूट प्राप्त है या किसी ऐसे देश में स्थित है जहां भारत के साथ टैक्स जानकारी साझा करने का समझौता नहीं है, तो कंपनी की अन्य संबंधित एंटिटी यह रिपोर्ट फाइल कर सकती है।

फॉर्म 67

अगर किसी टैक्सपेयर ने 2022-23 के लिए फॉरिजन टैक्स क्रेडिट का दावा किया है, तो उन्हें यह फॉर्म 31 मार्च तक भरना होगा। यह उन लोगों के लिए जरूरी है, जिन्होंने सेक्शन 139(1) या 139(4) के तहत समय पर अपना इनकम टैक्स रिटर्न फाइल किया था।

अपडेटेड आईटीआर

असेसमेंट ईयर 2022-23 के लिए अपडेटेड इनकम टैक्स रिटर्न फाइल करने की आखिरी तारीख भी 31 मार्च है।

नोट : इन जरूरी तारीखों को ध्यान में रखते हुए टैक्सपेयर्स को सभी दस्तावेज समय पर फाइल कर लेने चाहिए, ताकि किसी भी तरह की पेनल्टी या लीगल कार्रवाई से बचा जा सके।

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

- बिना काम किए जिंदगीभर एक निश्चित रकम आती रहेगी
- एक करोड़ के बन जाएंगे तीस करोड़, सभी खर्चे होंगे पूरे

ऐसे करें निवेश, चक्रवृद्धि ब्याज का जादू दिखाएगा कमला, सात पुश्तें भी जिंदगीभर बैठकर खाएंगी

एसडब्ल्यूपी निवेश का बेहतरीन फॉर्मूला, भविष्य होगा चकाचक

इसका सबसे अच्छा तरीका एसडब्ल्यूपी है। जैसे एसआईपी होता है, उसका उलट एसडब्ल्यूपी है। आपको एसडब्ल्यूपी के जरिए किसी म्यूचुअल फंड में एक करोड़ रुपये निवेश करने होंगे। फिर वहां से आप हर महीने अपने खर्चे लायक एक फिक्स रकम निकाल सकते हैं। इसके बाद भी ये एक करोड़ लगातार बढ़ते रहेंगे। धीरे-धीरे यह रकम इतनी बढ़ जाएगी कि सात पुश्तों तो क्या, इसके आगे की पीढ़ी भी घर बैठकर खाती रहेगी।

अगर आपके पास बड़ी रकम है और चाहते हैं कि बिना काम किए जिंदगीभर एक निश्चित रकम आती रहे तो यह संभव है। इसके लिए आपको एक प्लान के तहत निवेश करना होगा। इससे आपका और आपके बच्चों तक का भविष्य सुरक्षित हो जाएगा। आपकी सात पुश्तें भी आराम से बैठकर खा सकती हैं। आपको इसके लिए लक्ष्य तय कर निवेश करना होगा। ऐसे निवेश के लिए सबसे बेहतर तरीका एसडब्ल्यूपी है। यह एसआई के विपरीत अच्छा मुनाफा देने में सक्षम है। इस योजना में आपको चक्रवृद्धि ब्याज का जादू देखने को मिलेगा और आप मालामाल हो जाएंगे और कमाने के लिए बाहर नही जाना पड़ेगा बिना कुछ किए ही एक निश्चित रकम आपको हर महीने मिलती रहेगी। ऐसा बिलकुल संभव है इसे संभव बनाता है म्यूचुअल फंड। इसमें बड़ी रकम निवेश करके न केवल आप बल्कि आपकी सात पुश्तें भी जिंदगीभर बैठकर खा सकती हैं। काफी लोग ऐसे हैं जिनके पास काफी पैसा है। वह उस पैसे को कई जगह निवेश करते हैं। काफी ऐसी स्कीम हैं, जिनमें एक फिक्स रिटर्न मिलता है। इनमें एफडी, एनपीएस शामिल हैं। हालांकि इनसे मिलने वाला रिटर्न काफी कम होता है। वहीं, अगर आपके पास एक करोड़ रुपये हैं तो इससे न केवल आप बल्कि आपकी सात पुश्तें भी जिंदगीभर बैठकर खा सकती हैं, लेकिन इसके लिए इस एक करोड़ रुपये को भी सही जगह निवेश करना होगा।

कैसे काम करता है एसडब्ल्यूपी

हर म्यूचुअल फंड सालाना कुछ न कुछ रिटर्न देता है। डेटा के मुताबिक सालाना रिटर्न 15 फीसदी या इससे ज्यादा तक मिलता है। जब आप एक करोड़ रुपये किसी म्यूचुअल फंड में निवेश करेंगे तो इस पर भी आपको रिटर्न मिलेगा। जानकारों के मुताबिक एसडब्ल्यूपी में सालाना रिटर्न 8 फीसदी से ज्यादा मानकर नहीं चलना चाहिए। हालांकि रिटर्न इससे ज्यादा मिल सकता है। ऐसे में न केवल आप हर महीने कुछ रकम निकाल सकेंगे, बल्कि आपकी रकम भी बढ़ती जाएगी।

हर महीने कितने रुपये मिलेंगे

एसडब्ल्यूपी के दौरान आपको इस बात का ध्यान रखना होगा कि वर्षों तक के लिए आप हर महीने बहुत ज्यादा रकम नहीं निकाल सकते। मान लें कि कोई म्यूचुअल फंड 8 फीसदी सालाना रिटर्न दे रहा है। इसमें एक करोड़ रुपये निवेश करके आप हर महीने 50 हजार रुपये जिंदगीभर निकाल सकते हैं। अगर आप 30 साल तक 50 हजार रुपये महीने निकालते हैं तब भी 30 साल बाद भी आपकी यह रकम बढ़कर 3 करोड़ रुपये से ज्यादा की बचेगी।

कैसे कमाई करेंगी सात पुश्तें

चूंकि आपके पास अभी 3 करोड़ रुपये हैं। आप चाहें तो जिंदगीभर हर महीने 50 हजार या इससे ज्यादा की रकम और ले सकते हैं। मान लें कि आप ये 30 करोड़ रुपये अपने बच्चों के लिए छोड़ जाते हैं। 30 साल बाद महंगाई बढ़ेगी। साथ ही म्यूचुअल फंड का रिटर्न भी बढ़ने की उम्मीद रहेगी। अगर आपकी पीढ़ी उन 3 करोड़ रुपये को किसी ऐसे म्यूचुअल फंड में निवेश करती है जो 10 फीसदी सालाना का रिटर्न दे रहा हो। तो ऐसे में आपकी वह पीढ़ी 30 साल तक एक लाख रुपये महीने निकाल सकती है। इसके बाद भी ये 3 करोड़ रुपये बढ़कर 30 करोड़ रुपये से ज्यादा हो चुके होंगे। ऐसे ही अगली पीढ़ी भी इस रकम का इस्तेमाल कर सकेगी।

चक्रवृद्धि ब्याज का चलता है जादू

एसडब्ल्यूपी में चक्रवृद्धि ब्याज का जादू चलता है। जानकार कहते हैं कि म्यूचुअल फंड में लॉन्ग टर्म निवेश करने पर ज्यादा फायदा मिलने की उम्मीद होती है। ऐसे में कुल रकम मूल रकम से कहीं ज्यादा हो जाती है। ऊपर के उदाहरणों में हमने बताया है कि किस प्रकार एक करोड़ रुपये की रकम 30 करोड़ रुपये हो गई, वह भी तब जब उसमें से हर महीने कभी 50 हजार तो कभी एक लाख रुपये निकलते रहे। म्यूचुअल फंड में निवेश करने से पहले किसी जानकार की सलाह जरूर लें।

बच्चों को कारोबार शुरू करने में भी मिलेगी मदद, वित्तीय शिक्षा जल्दी शुरू करने के फायदों पर बफे का जोर

छोटी बचत से बढ़ती संपत्ति और स्मार्ट खर्च की आदतें विकसित करें

वॉरेन बफे की ये 5 बातें बच्चों को जरूर सिखाएं, पैसों की कभी नहीं होगी तंगी

जानकारी | बिजनेस डेस्क

यह शो 26 एपिसोड तक चला। इसमें कुछ बच्चों की कहानी दिखाई गई जो पैसे के मामलों में बफे से सलाह लेते थे। साल 2013 में उन्होंने एक कार्यक्रम में कहा था कि बच्चों को पैसों के बारे में समझाना कभी भी जल्दी नहीं होता। चाहे वो नए खिलौने की कीमत समझना हो या पैसे बचाने का महत्व। यहां 5 ऐसी बातें दी गई हैं जिन्हें बफे ने अपने बच्चों को सिखाया था। आप भी अपने बच्चों को ये बातें सिखा सकते हैं।

वॉरेन बफे दुनिया के अमीर लोगों में शुमार हैं। उन्होंने धैर्य, स्मार्ट निवेश और आर्थिक अनुशासन के सिद्धांतों पर अपना भाग्य बनाया है। बफे सिर्फ अपने बिजनेस में ही कामयाब नहीं हैं, बल्कि बच्चों को पैसे के बारे में महत्वपूर्ण सबक सिखाने को भी प्राथमिकता देते हैं। साल 2011 में बफे ने सीक्रेट मिलिनेयर्स क्लब नामक एक एनिमेटेड सीरीज बनाने में मदद की। इसका उद्देश्य बच्चों को व्यवसाय, निवेश और वित्तीय साक्षरता की मूल बातें सिखाना था। यह शो 26 एपिसोड तक चला। इसमें कुछ बच्चों की कहानी दिखाई गई जो पैसे के मामलों में बफे से सलाह लेते थे। साल 2013 में उन्होंने एक कार्यक्रम में कहा था कि बच्चों को पैसों के बारे में समझाना कभी भी जल्दी नहीं होता। चाहे वो नए खिलौने की कीमत समझना हो या पैसे बचाने का महत्व। यहां 5 ऐसी बातें दी गई हैं जिन्हें बफे ने अपने बच्चों को सिखाया था। आप भी अपने बच्चों को ये बातें सिखा सकते हैं।

जल्दी शुरुआत करें

बफे हमेशा कम उम्र से ही वित्तीय शिक्षा के महत्व पर जोर देते रहे हैं। साल 2013 में एक इंटरव्यू में उन्होंने कहा था, 'कभी-कभी माता-पिता अपने बच्चों के किशोरावस्था में पहुंचने पर ही पैसे का सही इस्तेमाल करने के बारे में बात करना शुरू करते हैं। जबकि वे प्री-स्कूल से ही शुरू कर सकते हैं।' कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी की एक स्टडी के मुताबिक बच्चे 7 साल की उम्र से ही पैसे से जुड़ी आदतें विकसित करने लगते हैं। कम उम्र में ही बच्चों को बचत, खर्च और कमाई जैसी बुनियादी बातें बताकर पेरेंट्स उन्हें दीर्घकालिक वित्तीय सफलता के लिए तैयार कर सकते हैं।

छोटी-छोटी बचत का भी महत्व

बफे सिखाते हैं कि ब्याज की शक्ति के कारण समय के साथ छोटी-छोटी बचत भी बढ़ सकती है। सीक्रेट मिलिनेयर्स क्लब में बफे ने कहा है कि नियमित रूप से थोड़े से पैसे बचाने से भी फायदा होता है। इस सबक को सिखाने का एक व्यावहारिक तरीका बच्चों को उनका अपना गुल्लक या बैंक अकाउंट देना है। पैरेंट्स ऐसे ऐप्स भी इस्तेमाल कर सकते हैं जिनसे बच्चे अपनी बचत पर नजर रख सकें और जमा राशि पर ब्याज भी कमा सकें।

स्मार्ट खर्च करने की आदत डालें

बच्चों को सबसे पहले यह सीखना चाहिए कि जरूरतों और चाहतों में अंतर कैसे करें। बफे एक आसान तरीका बताते हैं कि अपने बच्चों से उन चीजों की सूची बनाने को कहें जो वे खरीदना चाहते हैं। फिर, हर चीज को एक साथ देखें और तय करें कि यह जरूरी है या फिजूलखर्ची। यह आदत जल्दी डालने से माता-पिता अपने बच्चों को बड़े होने पर बेहतर खर्च करने की आदतें विकसित करने में मदद कर सकते हैं।

स्किल निखारकर संपत्ति बढ़ाएं

बफे खुद जीवन भर सीखते रहे। वह अक्सर सेल्फ स्टडी के महत्व पर जोर देते हैं। सीक्रेट मिलिनेयर्स क्लब के एक एपिसोड में उन्होंने कहा है कि सबसे अच्छा निवेश जो आप कर सकते हैं वह खुद में है। जितना अधिक आप सीखेंगे, उतना ही अधिक आप कमाएंगे। बफेट खुद रोजाना कई अखबार पढ़ते हैं और बच्चों को ज्ञान के प्रति जुनून विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। निरंतर सीखना लॉन्ग टर्म के लिए वित्तीय सफलता की कुंजी है। बफे ने सिर्फ छह साल की उम्र में च्यूइंग गम और कोक की बोतलें बेचकर पैसा कमाना शुरू कर दिया था। बच्चों को अपने खुद के बिजनेस आइडिया तलाशने के लिए प्रोत्साहित करें। फिर चाहे वह नींबू पानी का स्टॉल हो या ऑनलाइन स्टोर। इससे बच्चों को वित्तीय सिद्धांतों को जल्दी समझने में मदद मिलती है। पैरेंट्स मार्गदर्शन और यहां तक कि छोटा बिजनेस शुरू करने में मदद करने के लिए शुरुआती पैसा देकर बच्चों को प्रोत्साहित कर सकते हैं।

सीनियर सिटीजन्स सेविंग्स स्कीम में टैक्स छूट और बेहतर रिटर्न

बिजनेस डेस्क

वित्त वर्ष 2024-25 का आखिरी महीना यानी मार्च शुरू हो चुका है। इस महीने आपको कई जरूरी काम निपटाने हैं। इन्हीं कामों में से एक है वित्त वर्ष 2024-27 के लिए टैक्स सेविंग इन्वेस्टमेंट। ये इन्वेस्टमेंट आपको 31 मार्च 2024 तक करना है। अगर आप सीनियर सिटिजन हैं और सेफ इन्वेस्टमेंट के साथ टैक्स भी बचाना चाहते हैं तो पोस्ट ऑफिस सीनियर सिटिजंस सेविंग्स स्कीम अकाउंट (एससीएसएस) में पैसा लगा सकते हैं। इस स्कीम में अभी 8.20% सालाना ब्याज दिया जा रहा है। इस योजना में निवेश कर आप टैक्स भी बचा सकते हैं और अच्छा रिटर्न भी प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए इसमें निवेश करना आपके लिए फायदेमंद साबित हो सकता है।

अधिकतम 30 लाख रुपये कर सकते हैं निवेश

पोस्ट ऑफिस सीनियर सिटिजंस सेविंग्स स्कीम के तहत सिर्फ 1000 रुपये में अकाउंट खोला जा सकता है। इस स्कीम में ज्यादा से ज्यादा 30 लाख रुपये तक निवेश कर सकते हैं। इस स्कीम पर 8.2% सालाना ब्याज मिल रहा है। वहीं देश के सबसे बड़े बैंक एसबीआई 5 साल की फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी) पर सीनियर सिटिजंस को 6.50% ब्याज दे रहा है। यानी इस स्कीम में एफडी से ज्यादा ब्याज दिया जा रहा है।

5 साल का मैच्योरिटी पीरियड

इस स्कीम का मैच्योरिटी पीरियड 5 साल का रहता है। यानी इस स्कीम में आपको 5 साल के लिए निवेश करना होता। हालांकि आप 5 साल से पहले भी अकाउंट बंद कर सकते हैं, लेकिन ऐसा करने पर आपको पेनल्टी देनी होती है।

इनकम टैक्स छूट का मिलता है लाभ

इस योजना में निवेश करने पर इनकम टैक्स एक्ट के सेक्शन 80C के तहत आप अपनी कुल आय से 1.5 लाख रुपये की कटौती का दावा कर सकते हैं। आसान भाषा में इसे ऐसे समझें, आप सेक्शन 80C के माध्यम से अपनी कुल कर योग्य आय से 1.5 लाख तक कम कर सकते हैं।

तिमाही आधार पर मिलता है ब्याज

इस योजना के तहत ब्याज तिमाही आधार पर मिलता है और अप्रैल, जुलाई, अक्टूबर व जनवरी के पहले वर्किंग डे को क्रेडिट कर दिया जाता है। सीनियर सिटीजन्स सेविंग्स स्कीम अकाउंट किसी भी पोस्ट ऑफिस में खुलवा सकते हैं। 60 साल या उससे अधिक उम्र के बाद अकाउंट पोस्ट ऑफिस जाकर खुलवाया जा सकता है। हालांकि वीआरएस लेने वाला व्यक्ति जो 55 वर्ष से अधिक लेकिन 60 वर्ष से कम है वो भी इस अकाउंट को खोल सकता है। इसके अलावा डिफेंस (रक्षा विभाग) से रिटायर्ड हुए हो वो 50 साल से अधिक और 60 वर्ष से कम उम्र के लोग भी इस योजना में निवेश कर सकते हैं। हालांकि इस स्थिति में रिटायर होने के 1 महीने के भीतर निवेश करना होता है।

कितना फायदा होगा

अगर आप इस योजना में 1 लाख रुपये निवेश करते हैं तो 5 साल बाद आपको कुल 1 लाख 50 हजार रुपए मिलेंगे। वहीं 2 लाख रुपये का निवेश करने पर 3 लाख रुपये मिलेंगे।

फरवरी में घटे म्यूचुअल फंड में निवेश, जनवरी के मुकाबले 2% की गिरावट

काम की बात | बिजनेस डेस्क

- म्यूचुअल फंड एसआईपी में पैसा लगाने वालों की संख्या घटी, फरवरी में एसआईपी में 25,999 करोड़ रुपये आए
- यह पिछले तीन महीनों में सबसे कम

शेयर बाजार में पिछले कुछ महीनों से लगातार गिरावट ही गिरावट का दौर जारी है। इससे सभी निवेश माइनस में हैं। इससे सिस्टमेटिक इन्वेस्टमेंट प्लान या एसआईपी के जरिए निवेश करने वालों की संख्या में भी कमी हुई है। जी हां, बीते फरवरी महीने में एसआईपी के जरिए निवेश थोड़ा कम हुआ है। इस साल जनवरी में जहां एसआईपी के जरिए 26,400 करोड़ रुपये का निवेश आया था, वहीं फरवरी में यह घटकर 25,999 करोड़ रुपये रह गया। यह तीन महीने का सबसे कम है। दिसंबर में भी इस तरीके से 26,459 करोड़ रुपये का निवेश आया था। यह जानकारी एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया या एम्फी के आंकड़ों से मिली है।

एम्फी के आंकड़ों में हुआ खुलासा, कम दिलचस्पी दिखा रहे निवेशक

म्यूचुअल फंड के कितने फोलियो

फरवरी 2025 तक म्यूचुअल फंड के कुल फोलियो या खाते 23,22,80,804 हो गए हैं। रिटेल म्यूचुअल फंड खातों (इक्विटी + हाइब्रिड + सॉल्यूशन-ओरिएंटेड स्कीम्स) की संख्या फरवरी में बढ़कर 18,42,02,267 हो गई, जो जनवरी में 18,22,23,078 थी। रिटेल एयूएम (इक्विटी + हाइब्रिड + सॉल्यूशन-ओरिएंटेड स्कीम्स) फरवरी में घटकर 36,44,112 करोड़ रुपये रह गया, जबकि जनवरी में यह 38,77,595 करोड़ रुपये था। मतलब बाजार में उतार-चढ़ाव का असर दिखा है।

फरवरी में भी बढ़े सिप अकाउंट

फरवरी 2025 में 44,56,425 नए एसआईपी रजिस्टर हुए। इस महीने एसआईपी का कुल एयूएम 12,37,783.57 करोड़ रुपये रहा। इसमें 8.26 करोड़ एसआईपी खाते नियमित रूप से योगदान दे रहे थे। फरवरी 2025 में 29 नई स्कीम्स लॉन्च हुईं, जिनसे कुल मिलाकर 4,029 करोड़ रुपये जुटाए गए। ये स्कीम्स अलग-अलग कैटेगरी की थीं।

म्यूचुअल फंड इंडस्ट्री में मजबूती

एम्फी के चीफ एक्जीक्यूटिव वेंकट चलसानी ने बताया, भारतीय म्यूचुअल फंड इंडस्ट्री लगातार मजबूती दिखा रही है। सभी कैटेगरी में निवेशक लगातार पैसा लगा रहे हैं। उनका कहना है खाजार में उतार-चढ़ाव के बावजूद, निवेशकों का भरोसा बना हुआ है। 40,063 करोड़ रुपये का नेट इनफ्लो इस बात का सबूत है कि निवेशक लंबी अवधि के लिए निवेश करने में यकीन रखते हैं।

फरवरी में एयूएम में क्यों हुई गिरावट

उन्होंने बताया कि जनवरी से फरवरी में एयूएम में गिरावट की मुख्य वजह इक्विटी फंड में मार्केट का उतार-चढ़ाव है। लेकिन एसआईपी में निवेश लगातार आ रहा है, जिससे पता चलता है कि लोग अब भी नियमित निवेश को तरजीह दे रहे हैं। चलसानी ने निवेशकों को शिक्षित करने और जागरूकता फैलाने के लिए एम्फी की प्रतिबद्धता दोहराई। उन्होंने हर तरह के बाजार में वित्तीय अनुशासन के महत्व पर जोर दिया।

नेट इनफ्लो में गिरावट

फरवरी महीने के दौरान म्यूचुअल फंड में कुल नेट इनफ्लो 79% गिर गया। इक्विटी म्यूचुअल फंड में निवेश 26% घटकर 29,303 करोड़ रुपये रह गया, जबकि जनवरी में यह 39,687 करोड़ रुपये था। डेट म्यूचुअल फंड में फरवरी में 6,525 करोड़ रुपये का आउटफ्लो हुआ, जबकि जनवरी में 1.28 लाख करोड़ रुपये का इनफ्लो हुआ था।

क्या है म्यूचुअल फंड

म्यूचुअल फंड की परिभाषा एक ऐसा निवेश है जो आपके पैसे को कई अन्य लोगों के पैसे के साथ जोड़ता है जो समान निवेश लक्ष्य साझा करते हैं। पेशेवर मनी मैनेजर्स पैसे के पूल का उपयोग सिक्योरिटीज खरीदने के लिए करते हैं जो म्यूचुअल फंड के निर्दिष्ट उद्देश्यों को प्राप्त करने में मदद कर सकते हैं। म्यूचुअल फंड एक उपयुक्त रिटायरमेंट निवेश हो सकता है क्योंकि वे पेशेवर प्रबंधन और विविधीकरण प्रदान करते हैं। वे एफडीआईसी बीमाकृत नहीं हैं और उनमें निवेश जोखिम शामिल हैं, जिसमें मूलधन की संभावित हानि और मूल्य में उतार-चढ़ाव शामिल है।

म्यूचुअल फंड के प्रकार

इक्विटी (स्टॉक) फंड : ये वे फंड हैं जो सार्वजनिक रूप से कारोबार करने वाली कंपनियों के कॉर्पोरेट स्टॉक में निवेश किए जाते हैं। इन फंडों को कंपनी के आकार, उद्योग या क्षेत्र के प्रकार या संभावित विकास और मूल्य सहित विभिन्न घटकों के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है।

बॉन्ड फंड : ये ऋण साधनों से बने होते हैं जिन्हें सरकार या निगम निवेशकों को पूंजी जुटाने के लिए जारी करते हैं। वे अक्सर स्टॉक फंड की तुलना में कम जोखिम उठाते हैं। हालांकि, उनमें वृद्धि की संभावना कम हो सकती है।

मनी मार्केट फंड : इस प्रकार के म्यूचुअल फंड सरकार या निगमों जैसी संस्थाओं से नकदी या नकदी-समतुल्य अल्पकालिक ऋण में निवेश करते हैं। मनी मार्केट फंड को आम तौर पर कम जोखिम वाला निवेश माना जाता है।

हाइब्रिड फंड : हाइब्रिड फंड में कम से कम दो या उससे ज्यादा एसेट क्लास शामिल होते हैं - आम तौर पर स्टॉक और बॉन्ड का मिश्रण। हाइब्रिड फंड के सबसे लोकप्रिय रूपों में से एक को बैलेंस्ड फंड कहा जाता है, जो एक प्रकार का पोर्टफोलियो है जो 60% स्टॉक में और 40% बॉन्ड में निवेश करता है।

खबर संक्षेप

बहुजन नायक कांशीराम का जन्मोत्सव मनाया

महेंद्रगढ़। मोहल्ला महायाचान में बहुजन नायक कांशीराम का जन्मोत्सव गुरु रविदास मंदिर में से मनाया गया। इस कार्यक्रम के मुख्यातिथि बहुचन समाज पार्टी के कार्यकर्ता सतबीर जोनावास व अध्यक्षता पूर्व प्रधान संदीप महायच ने की। सतबीर जोनावास ने कांशीराम के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज के ही दिन कांशीराम का जन्म पंजाब के रोपड़ जिला के खासपुर गांव में हुआ था।

कल्पना यादव ने सीजीएल परीक्षा में पाई सफलता

नांगल चौधरी। कर्मचारी चयन आयोग की ओर से घोषित सीजीएल की परीक्षा में बिगोपुर निवासी कल्पना यादव ने सफलता हासिल की है। ग्राम पंचायत ने मेधावी छात्रा को प्रोत्साहित करने के लिए सम्मान समारोह आयोजित करने का निर्णय लिया है। ग्रामीणों ने बताया कि दलीप यादव के एक लड़का व लड़की समेत दो संतान हैं। बड़ी बेटी कल्पना यादव ने नारनौल पीजी कॉलेज से साइंस विषय में स्नात्तक करने के बाद जयपुर से एमएससी उतीर्ण की।

हवन व भंडारे कर मनाया होली मिलन उत्सव

महेंद्रगढ़। गांव कोथल खुर्द में हर वर्ष की भांति ग्राम वासियों ने आपसी भाईचारा व सौहार्दभाव वर्धन के लिए बाबा अमरदास धाम व मंदिर परिसर में धूमधाम से होली पर्व मनाया। इस अवसर पर पंडित सुभाष शर्मा के ब्रह्मत्व व उत्तम प्रकाश शास्त्री के संयुक्त पौरोहित्य निर्देशन प्रदीप कुमार यज्ञमान दंपति के रूप में वृहत यज्ञ का आयोजन किया गया। ग्रामवासियों ने सामूहिक रूप मे भंडारे का आयोजन किया।

नीरज ने एसएससी सीजीएल की परीक्षा में पाई सफलता

नारनौल। नीरज कुमार की सफलता उन तमाम विद्यार्थियों के लिए प्रेरणादायक है जो कठिन परिस्थितियों में भी अपने सपनों को साकार करने का जज्बा रखते है। उनकी कहानी साबित करती है कि अगर लक्ष्य स्पष्ट हो और मेहनत सच्ची होए तो सफलता अवश्य मिलती है।

नीरज कुमार।

महेंद्रगढ़ जिले के नांगल चौधरी खंड के भोजावास गांव के रहने वाले युवक नीरज कुमार ने एसएससी सीजीएल की मुख्य परीक्षा में सफलता हासिल की। वे पोस्टल असिस्टेंट आबकारी निरीक्षक पद के लिए चयनित हुए है।

नर नारायण समिति ने मनाया होली महोत्सव

समाज की एकता में संवर्धन करता है होली का त्योहार: रामसिंह मधुर

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

नर नारायण समिति के तत्वावधान में टेलीफोन एक्सचेंज के पीछे शिव मन्दिर में होली मंगल मिलन समारोह का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता वयोवृद्ध मास्टर किशनलाल शर्मा, सेवानिवृत प्राचार्य गजानन्द कौशिक, धर्मचन्द छाबड़ा प्रधान सनातम धर्म व परमानंद दिवान ने की। मुख्य वक्ता सत्यव्रत शास्त्री थे। सर्वप्रथम चक्रधारी भगवान कृष्ण के चरणों में मास्टर किशनलाल शर्मा, गजानन्द कौशिक, धर्मचन्द छाबड़ा, मुख्य वक्ता सत्यव्रत शास्त्री, नर नारायण सेवा समिति के प्रधान रामसिंह मधुर, संरक्षक परमानन्द दिवान पूर्व प्रधान, बेगराज गोयल पूर्व उपप्रधान, धर्मपाल शर्मा ने दीप प्रज्वलित करके कार्यक्रम की शुरुआत की। समिति के प्रधान रामसिंह मधुर, महासचिव मास्टर सत्यवीर, कोषाध्यक्ष राजेश शास्त्री ने सभी उपस्थित महानुभावों को चन्दन रोली का तिलक लगाया।

हास्य कवि सम्मेलन में कवि महेशचन्द शर्मा, सत्यनारायण वर्मा, भारत भूषण तायल, हरद्वारीलाल वर्मा ने हास्य रस की कविता सुनाकर सबको हंसा हंसा कर लोट पोट कर दिया। समिति के प्रधान रामसिंह मधुर ने नर नारायण सेवा समिति की गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। होली का त्योहार समाज की एकता में संवर्धन करता है। राष्ट्रीय चेतना व देश भक्ति का भाव उत्पन्न करता है। महापुरुषों का स्मरण कराके उनके पद चिह्नों पर चलने की प्रेरणा देता है। वरिष्ठ नागरिक संगठन के जिला प्रधान दुलीचन्द शर्मा ने कहा है कि होली धर्म व आध्यात्म में आस्था उत्पन्न करके हमें सन्मार्ग पर चलने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। रिटायर्ड कर्मचारी संघ के जिला प्रधान धनश्याम शर्मा ने कहा कि होली हमें मिल झूल कर रहने का पाठ पढ़ाती है।

नारनौल। होली महोत्सव में भाग लेते समिति सदस्य व अन्य। फोटो: हरिभूमि

नारनौल। फाग महोत्सव में भाग लेते श्रद्धालु। फोटो: हरिभूमि

फाग महोत्सव का आयोजन

नारनौल। श्रीश्याम महायज्ञ आयोजन समिति के तत्वावधान में शुक्रवार रात को फाग महोत्सव का आयोजन रहीश फार्म हाउस में किया गया। समिति के प्रेस सचिव डा. राहुल शर्मा ने बताया कि सर्वप्रथम सागर म्यूजिकल ग्रुप ने गणेश वंदना करके कार्यक्रम का आगाज किया। तत्पश्चात फरीदाबाद से पधारी भजन प्रवाहिका संध्या तोमर ने काली कमली वाला मेरा यार है आदि भजनों से बाबा के दरबार में हाजिरी लगाई। दौसा से पधारे भजन प्रवाहक अजय शर्मा ने भी अपने भजनों से बाबा के दरबार में हाजिरी लगाई तथा भक्तों को झूमने पर मजबूर कर दिया। कोलकाता के फूलों से द्वारा बाबा श्याम का श्रृंगार सजाया गया व छप्पन भोग लगाया गया। इस मौके पर आशीष गोयल, त्रिलोक चंद शर्मा, प्रवीण शर्मा, हरीश गुप्ता, दीपक दीवान, शिवा सिंघल, मयंक मित्तल, सुदेश शर्मा, मंजू यादव, अंतिमा गुप्ता, डा. कविता आदि मौजूद थे।

महेंद्रगढ़। होली खेलते हुए। फोटो : हरिभूमि

श्री विष्णु भगवान मंदिर में मनाया होली मिलन समारोह

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

रेलवे रोड स्थित श्री विष्णु भगवान मंदिर में श्री विष्णु सेवा समिति द्वारा होली मिलन समारोह का आयोजन किया गया। इस आयोजन में क्षेत्र के अनेक लोगों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और रंगों के महापर्व होली का आनंद लिया। समिति प्रधान मनोहर लाल झूकिया, कोषाध्यक्ष रामानंद शर्मा, महासचिव प्रोफेसर सुधीर कुमार, संजय मित्तल, मंदिर प्रभारी शंकर लाल ने आए हुए अतिथियों का फूल माला पहनाकर एवं गुलाल लगाकर स्वागत किया। इस दौरान सभी ने एक-दूसरे को गुलाल लगाकर एवं फूलों की होली खेलकर प्रेम और सौहार्द का संदेश दिया। महिलाओं ने पारंपरिक होली गीत गाकर और नृत्य प्रस्तुत कर माहौल को और भी उल्लासपूर्ण बना दिया। कार्यक्रम में भक्तों के लिए प्रसाद की व्यवस्था की गई, जिसे श्री विष्णु भगवान और माता लक्ष्मी को भोग लगाने के बाद सभी श्रद्धालुओं में वितरित किया गया। मंदिर प्रभारी शंकर लाल ने बताया कि धार्मिक आयोजन से समाज में एकता, प्रेम और भाईचारे की भावना मजबूत होती है। मंदिर संरक्षक संजय मित्तल ने भी होली पर्व के धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व पर विस्तार से चर्चा की। इस अवसर पर समिति कोषाध्यक्ष रामानंद शर्मा, महासचिव प्रोफेसर सुधीर कुमार, संजय मित्तल, सुशील कुमार अग्रवाल, अमरजीत अरोड़ा, मुकेश मेहता, अमित मिश्रा, आनंद कौशिक, जेपी भारद्वाज, सुरेश निम्बेड़या, लालचंद, रामेश्वर शर्मा, भूषण अग्रवाल, अशोक, संजय माधोगढ़िया आदि मौजूद थे।

कर्मचारी कॉलोनी में होली मिलन और धुलंडी कार्यक्रम आयोजित

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

राजकीय कर्मचारी कॉलोनी में होली मिलन व धुलंडी कार्यक्रम मनाया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डा. विनीत यादव व डा. ज्योति यादव थे। इस अवसर पर महिलाओं के म्यूजिकल चेयर खेल में भाग लिया। जिसमें दीपा वालिया ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। कॉलोनी सदस्यों ने डीएचबीवीएन चीफ इंजियर नवीन वर्मा, पार्षद मोहनलाल शर्मा, शास्त्री नगर प्रधान राजेश यादव, पब्लिक हेल्थ एसडीओ मुकेश शर्मा को अंग वस्त्र पहनाकर सम्मानित किया। मंच का संचालन प्रवक्ता कवीन्द्र सचदेवा ने किया। इस मौके पर कॉलोनी प्रधान रतनसिंह यादव, विजयसिंह यादव, कृष्ण शर्मा, सुनील गौड़, सज्जन शर्मा, रामनिवास शर्मा, कमल गौड़, राजकुमार यादव, हनुमान यादव, विकास लाम्बा, पुरुषोतम गौड़, सुरेन्द्र यादव आदि मौजूद थे।

नारनौल। धुलंडी कार्यक्रम में भाग लेते कॉलोनी के लोग। फोटो : हरिभूमि

शहीद मेजर सतीश दहिया कॉलेज ने लगाया शिविर

नांगल चौधरी। शहीद मेजर सतीश दहिया राजकीय कॉलेज के सात दिवसीय एनएसएस शिविर का शुभारंभ रिटायर्ड प्राचार्य डा. सुमेर सिंह यादव ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य डा. अनिल यादव ने की। जिसमें कैडेटों को समाज में फैली विभिन्न कुरीतियों को मिटाने व जल संरक्षण जागरूकता अभियान के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम की इंचार्ज डा. कविता कुमारी व डा. सुरेंद्र कुमार ने बताया कि विद्यार्थियों को सामाजिक दायित्यों से जुड़कर रहना अनिवार्य है, क्योंकि समाज का विकास होने पर समृद्ध राष्ट्र की कल्पना संभव है। इसी मकसद से 1869 में राष्ट्रीय स्वयं सेवा योजना क्रियांवित की गई थी।

उमंग के साथ मनाया धुलंडी का त्योहार

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

लोकसंस्कृति संरक्षण प्रकोष्ठ एवं मिशन महेन्द्रगढ़ अपना जल टीम सदस्यों ने उमंग के साथ लोकपर्व होली व धुलंडी का त्यौहार मनाया और लोगों को जल व प्राकृतिक संसाधनों के सदुपयोग का सन्देश दिया।

प्रकोष्ठ अध्यक्ष डा. कृष्णा आर्या के नेतृत्व में महिलाओं की टीम ने हुडा सेक्टर, रामनगर, मोती नगर व हाऊसिंग आदि स्थानों पर घूम घूमकर महिलाओं को परंपरागत लोकपर्वों की पृष्ठभूमि के बारे में बताया और सभी ने मिलकर होली पर्व व जल की उपयोगिता से जुड़े परंपरागत लोकगीत गाए। इस मौके पर शकुंतला, उषा रानी, सुमनलता, सरोज कश्यप, राज वधवा, मनीषा, किरण, मोनिका, लाली देवी, सुनीता, मंजू, सीमा, सुशीला, डा. रविन्द्र, पवन, मोनिका, सपना, ललिता आदि मौजूद थे।

नारनौल। कार्यक्रम में भाग लेती महिलाएं। फोटो : हरिभूमि

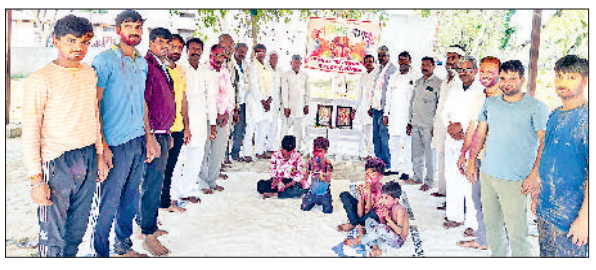

मंडी अटेली। अटाली में होली मिलन समारोह में उपस्थित पदाधिकारी।

जिला स्तरीय होली मिलन समारोह आयोजित

मंडी अटेली। राष्ट्रीय प्रजापति महासभा जिला महेंद्रगढ़ इकाई की ओर से अटाली के बाबा भैया मंदिर में होली मिलन समारोह का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम सुरेश कुमार प्रजापति की अध्यक्षता में किया गया। इस मौके पर महासभा के राष्ट्रीय सचिव एवं जिला अध्यक्ष विजय सिंह प्रजापति ने बताया कि त्योहार हमें पिछले गिले-शिकवे भूलाकर आपसी भाईचारे व प्रेम से जीना सिखाते हैं। सभी ने प्रेम व भाईचारे के रूप में एक-दूसरे को गुलाल लगाकर तिलक होली खेली तथा आगे भी हमेशा भाईचारे को बनाए रखने के लिए सहमति जताई। युवा जिला अध्यक्ष ठेकेदार बलवान सिंह ने भगत प्रह्लाद के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए बताया कि उनके पिता हिरणाकश्यप ने उन्हें अनेक तरह से यातनाएं दी, लेकिन वे सत्य पर डटे रहे और अंत में सत्य की जीत हुई और असत्य की हार हुई।

बसपा संस्थापक कांशीराम की 90वीं जयंती मनाई

हरिभूमि न्यूज ▶▶| मंडी अटेली

बसपा संस्थापक कांशीराम की 90वीं जयंती सिहमा में मनाई। इस मौके पर मुख्य अतिथि बसपा के जोन प्रभारी अशोक दास नारनौलिया और विशिष्ट अतिथि जिला अध्यक्ष प्रमोद कटारिया व जिला कोषाध्यक्ष दलवीर थानेदार रहे। इस मौके पर बसपा जोन प्रभारी अशोक दास नारनौलिया ने बताया कि कांशीराम का जन्म ब्रिटिश शासन काल में पंजाब के रूपनगर में 15 मार्च 1934 को हुआ था। उन्होंने रोपड़ के शासकीय महाविद्यालय से 1956 में बीएससी की डिग्री हासिल करने के बाद में पुणे में स्थित गोला बारूद फैक्ट्री में क्लास वन अधिकारी के पद पर उनकी नियुक्ति हुई। इस मौके पर बसपा जिला अध्यक्ष प्रमोद कटारिया ने बताया कि कांशीराम ने डा. भीमराव आंबेडकर ने अधूरा मिशन पूरा करने का संकल्प लिया था। हक और सम्मान की लड़ाई को आगे बढ़ाने के लिए उन्होंने बसपा की स्थापना की थी। सन 1986 में उन्होंने यह कहते हुए कि अब वे बहुजन समाज पार्टी के अलावा किसी और संस्था के लिए काम नहीं करेंगे। पार्टी की बैठकों और अपने भाषणों के माध्यम से कांशीराम ने कहा कि अगर सरकारें कुछ करने का वादा करती हैं तो उसे पूरा भी करना चाहिए।

मंडी अटेली। बसपा संस्थापक कांशीराम के चित्र पर पुष्प अर्पित करते हुए।

नारनौल। पाठशाला के शुभारंभ पर हवन करते हुए। फोटो : हरिभूमि

निःशुल्क झुग्गी झोपड़ी पाठशाला का शुभारंभ

नारनौल। संत माधवदास महाराज के नेतृत्व में झुग्गी झोपड़ियों में रहने वाले बच्चों को भिक्षावृत्ति से दूर करने व उनको शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए शनिवार को निःशुल्क झुग्गी झोपड़ी पाठशाला का शुभारंभ किया। इस पाठशाला की शुरूआत दांतला पहाड़ की तलहटी में नंदी गोशाला के समीप बने मंदिर श्री राम दरबार परिसर में बने भवन में की गई। इस अवसर पर मंदिर परिसर में हवन भी किया गया। मामाशाहों, समाजसेवकों व आमजन के सहयोग से स्टेशनरी आदि की सुविधा उपलब्ध करवाई जा रही है। इन बच्चों को तमाम सरकारी सुविधाएं भी उपलब्ध करवाने का प्रयास किया जाएगा। बच्चों को पढ़ाने के लिए दो टीचर्स भी लगाए गए हैं। संत माधवदास ने बताया कि ये झुग्गी झोपड़ियों के बच्चे कचरा बीनने, भीख मांगने, बाल मजदूरी करके अपनी आजीविका चलाते हैं, जो उन्हें शिक्षा से दूर ले जाता है। झुग्गी झोपड़ी में रहने वाले गरीब बच्चों को निःशुल्क शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए झुग्गी झोपड़ी पाठशाला शुरू की है।

कांशीराम का जन्मदिवस मनाया

नारनौल। बहुजन समाज पार्टी के संस्थापक साहब कांशीराम के जन्म दिवस पर नांगल चौधरी के गांव बूढ़वाल में विधानसभा स्तरीय विचार संगोष्ठी कार्यक्रम आयोजित किया गया। विधानसभा अध्यक्ष देवकीनंदन की अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यक्रम में जिला अध्यक्ष प्रमोद कटारिया मुख्य अतिथि व दलबीर थानेदार विशिष्ट अतिथि रहे। मुख्य अतिथि ने कहा कि मान्यवर कांशीराम ने दलितों, पिछड़ों के अंदर सामाजिक व राजनीतिक चेतना पैदा करने का काम किया। इसीलिए उनको बहुजन नायक भी कहा जाता है। उन्होंने पूरा जीवन बहुजनों के उत्थान और राजनीतिक चेतना के लिए लगा दिया।

यदुवंशी के 33 विद्यार्थियों ने पाई कॉमर्स ओलम्पियाड में सफलता

महेंद्रगढ़। यदुवंशी शिक्षा निकेतन के 33 विद्यार्थियों ने अंतर्राष्ट्रीय कॉमर्स ओलम्पियाड में सफलता प्राप्त कर अपने विद्यालय व क्षेत्र का नाम रोशन किया। परीक्षा में बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए 11वीं कक्षा में खुशी, सपना, नैंसी, प्रिया, लक्ष्य, शिवानी, तनु, यमन, कृश, पारूल, हन्नी, गौरव, यश, तेजस, सक्षम, केशव, लक्ष्य ने सफलता हासिल की। वहीं 12वीं कक्षा में रेणु, मनु, मुस्कान, यसलीन, मुस्कान यादव, मधु, खुशबू, नैना, मीनाक्षी, सौरव, विशांत, हिमांशु, कुणाल, कुशल, हार्दिक, अतिशेक ने सफलता प्राप्त की। नौ विद्यार्थियों ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर 12वीं रैंक प्राप्त की। सफलता प्राप्त विद्यार्थियों को 500 रुपये व गोल्ड मेडल तथा सर्टिफिकेट प्रदान कर सम्मानित किए जाएंगे। प्राचार्य पवन कुमार ने कहा कि ये सभी विद्यार्थी कॉमर्स विषय पढ़ने वाले छात्रों के लिए प्रेरणा स्त्रोत रहेंगे। ग्रुप चेयरमैन एवं पूर्व विधायक राव बहादुर सिंह ने कहा कि संस्था के विद्यार्थी कड़ी मेहनत, स्वाध्याय व उचित मार्गदर्शन के माध्यम से नित नए परिणाम ला रहे है। वाइस चेयरमैन एडवोकेट कर्णसिंह यादव, वाइस चेयरपर्सन संगीता यादव, ग्रुप निदेशक विजय सिंह यादव, फाउंडर डायरेक्टर राजेंद्र सिंह ने सभी सफल विद्यार्थियों को बधाई दी।

शास्त्री अखाड़ा के पहलवान पवन ने जीता 21 हजार का दंगल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

राजस्थान के निकटवर्ती ग्राम सुल्ताना अहिरान में होली पर्व पर बाबा रूपादास मंदिर प्रांगण में कुश्ती दंगल का आयोजन किया गया। कुश्ती दंगल में सबसे बड़ी कुश्ती 21000 रुपये की हुई। कुश्ती अखाड़ा संचालक पहलवान वीरेंद्र कुमार शास्त्री ने बताया कि 21000 रुपये की कुश्ती उनके ही शिष्य पहलवान पवन कुमार ने पंजाब के पहलवान को हराकर अखाड़े का सबसे बड़ा ईनाम अपने नाम किया। दूसरे नंबर की कुश्ती 11000 रुपये की थी, जिसे भी उनके ही शिष्य पहलवान संदीप कुमार ने जीती। दंगल में 50 रुपये से लेकर 21 हजार रुपये तक की कुश्तियां हुई, जिसमें शुरू से लेकर आखिर तक शास्त्री अखाड़े के पहलवानों का दबदबा रहा। वीरेंद्र शास्त्री ने बताया अब तक अनेक युवा पहलवान सरकारी सेवाओं में जैसे फौज, पुलिस, सीआरपीएफ व बीएसएफ आदि में लगकर देशसेवा कर रहे हैं। मेले में हजारों दर्शकों ने पहलवान पवन कुमार का तालियों एवं अनेक लोगों ने घी, बादाम व पैसे का पुरस्कार देकर सम्मानित किया। पंचायत समिति बुहाना के प्रधान हरिकिशन ने पहलवानोंका उत्साहवर्धन किया।

नारनौल। विजेता पहलवान को सम्मानित करते मुख्यातिथि पंचायत समिति बुहाना के प्रधान हरिकिशन।

सुबोध ने भौतिकी विषय में उत्तीर्ण की पीएचडी की उपाधि

कनीना। गांव लूखी निवासी सुबोध यादव को भौतिकी विषय में पीएचडी उपाधि हासिल की है। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से भौतिकी विषय में स्नातकोत्तर की पढ़ाई पूरी करने के बाद सुबोध ने पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ के भौतिकी विभाग से प्रायोगिक परमाणु भौतिक विषय में समीक्षित शोध पत्र और शोध कार्य लेख पूर्ण किया। उसके बाद उन्हें पीएचडी की उपाधि से अलंकृत किया गया। बीते 12 मार्च को पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ के 72वें दीक्षांत समारोह में देश की महामहिम राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू, हरियाणा तथा पंजाब के राज्यपाल, मुख्यमंत्री तथा विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. रेणु विग की उपस्थिति में आयोजित हुए दीक्षांत समारोह में उन्हें यह उपाधि प्रदान की गई। सुबोध ने बताया कि वे अपने दादा मेजर सुल्तान सिंह आईएनए द्वारा आजादी आंदोलन में उनके द्वारा दिए गए योगदानए संघर्ष व साहस से प्रेरणा लेकर आगे बढ़े है।

रोहतक के दीपक को हराकर संजय जैलाफ ने जीता कुश्ती दंगल

- गुवानी में बाबा गैबीराम के विशाल मेले एवं खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| मंडी अटेली

क्षेत्र के गांव गुवानी में बाबा गैबीराम के विशाल मेले एवं खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस मेले का शुभारंभ विशिष्ट अतिथि जिला प्रमुख डॉ. राकेश कुमार ने किया। मेले में गांव की सरपंच रीना यादव ने खेल विजेता खिलाड़ियों को पुरस्कृत किया। 51 हजार की कुश्ती प्रतियोगिता में दीपक रोहतक के पहलवान को हराकर संजय जैलाफ ने जीती।

वहीं 41 हजार रुपये की कुश्ती बलवान और पांडे गोठड़ा के बीच हुई। दोनों पहलवानों ने एक-दूसरे को चित करने के लिए हर तरह के दांव लगाए पर बाजी बराबरी पर छूटी। 31 हजार की कुश्ती अमित गणियार ने जीती।

मेले में हरियाणा स्टाइल कबड्डी प्रतियोगिता में प्रथम विजेता टीम नजवाना को एक लाख व द्वितीय खेड़ी रोहतक को 51 हजार रुपये का नगद पुरस्कार दिया गया। वहीं वॉलीबाल प्रतियोगिता में प्रथम 71 हजार रुपये का पुरस्कार जयपुर व द्वितीय 41 हजार रुपये का पुरस्कार राज राइफल को दिया गया। रेफरी की भूमिका में रामचंद्र, प्रदीप, बाबूलाल व जॉनसन रहे। इस मौके पर गांव की सरपंच रीना यादव ने कहा कि हमारे गांव में हर वर्ष धुलंडी पर पर विभिन्न प्रकार की खेल प्रतियोगिताएं होती हैं। हमारा गांव कई सालों से बाबा गैबीराम के नाम व आशीर्वाद लेकर मेले की शुरुआत करता है।

खेलकूद से न सिर्फ स्वास्थ्य बल्कि रोजगार एवं यश तथा सम्मान भी प्राप्त होता है। कई देशों में यह देखने में आया है कि खेलों का अप्रत्यक्ष रूप से संबंध देश के विकास से भी होता है। खेल अब रोजगार पाने का बेहतर जरिया बन गया है। खेल के माध्यम से आज न जाने कितने ही जिले के युवा विभिन्न न क्षेत्रों में नौकरी कर रहे हैं। रात्रि के समय रागिनी कार्यक्रम हुआ, जिसमें मुकेश फौजी की पार्टी में मिस गरिमा, आरती जांगड़ा, डांसर भारती चौधरी अपनी रंगारंग प्रस्तुति दी।

इस मौके पर सरपंच प्रतिनिधि दिनेश यादव, भूपसिंह, अनिल, तेजप्रकाश, सज्जन सिंह, सुरेंद्र सिंह, डॉ. रोशनलाल भाटिया, झल्लूराम, नितेश, पवन, राजवीर, अजय, विजयपाल, महावीर देशराज व साहब सिंह समेत अनेक ग्रामीण उपस्थित रहे।

मंडी अटेली। मेले का शुभारंभ करते जिला प्रमुख डा. राकेश कुमार व गुवानी में वॉलीबाल विजेता टीम के कप्तान को पुरस्कृत करते पूर्व मंत्री एवं विधायक ओमप्रकाश यादव। फोटो : हरिभूमि

9 परियोजनाओं के लिए 19.12 करोड़ मंजूर : श्रुति चौधरी

नारनौल। प्रदेश की महिला एवं बाल विकास विभाग तथा सिंचाई एवं जल संसाधन मंत्री श्रुति चौधरी शनिवार को मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी की अध्यक्षता में आयोजित हरियाणा राज्य सूखा राहत एवं बाढ़ नियंत्रण बोर्ड की 56वीं बैठक में विशेषतौर सम्मिलित हुई। मुख्यमंत्री ने सिंचाई मंत्री श्रुति चौधरी के आग्रह पर महेंद्रगढ़ के लिए नौ परियोजनाओं के लिए लगभग 19 करोड़ 12 लाख रुपये की राशि मंजूर करवाई। बैठक में बोर्ड में 55वीं बैठक तक पास की गई परियोजनाओं का अवलोकन किया गया और जो परियोजनाए लंबित हैं या कार्य पूरा नहीं हुआ है उन कार्यों के विषय में सख्त निर्देश दिए गए। इस संबंध में प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से सिंचाई मंत्री श्रुति चौधरी ने बताया कि महेंद्रगढ़ जिला के लिए विभिन्न गांवों की नौ परियोजनाओं के लिए करीब 19 करोड़ 12 लाख रुपये की राशि सीएम से मंजूर करवाई है।

सूचना

मैं प्यारे लाल पुत्र श्री कन्ही राम निवासी गांव सागरपुर तहसील अटेली जिला महेंद्रगढ़ (हरियाणा) बयान करता हूं कि मेरा पुत्र सुंदर सिंह मेरे कहने व सुनने से बाहर था तथा अपनी मनमर्जी करता था। इस कारण अपनी चल अचल संपत्ति से 10-10-2020 को बेदखल कर दिया था। अब मेरा पुत्र सुंदर सिंह मेरे व मेरे परिवार से काफी स्नेह व सेवा करने लगा है। मेरे व मेरे परिवार की इच्छा अनुसार कार्य करता हैं। इसलिए मैं अपने पुत्र सुंदर सिंह को अपने परिवार में शामिल करता हूं।

खबर संक्षेप

मेले में आई महिला के गले से तोड़ी सोने की चेन

महेंद्रगढ़। गांव पालड़ी पनिहार के बाबा रूपादास के मेले में महिला के गले से सोने की चैन तोड़ ली। सोने की चेन वजन लगभग 24 ग्राम था। पीड़ित महिला के पति ने पुलिस थाने में शिकायत देकर चेन बरामद करने तथा चोर को पकड़ने की मांग की है। अमरेंद्र ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि वह गांव पालडी पनिहारा का निवासी है। बीती 14 माच को समय करीब लगभग 11.50 बजे वह और उसकी पत्नी बाबा रूपादास के मेले में गए थे। जहां मंदिर परिसर के अंदर पत्नी मधु के गले से सोने की चेन काट ली, जिसका वजन लगभग 24 ग्राम था। कुछ देर बाद पता चला कि पत्नी के गले की चेन तोड़ ली, तब उसने मंदिर में लगे सीसीटीवी कैमरे की फुटेज चैक की, जिसमें पांच महिला संदिग्ध लगी, जिन्होंने पत्नी को पीछे से घेर लिया और उसके गले से सोने की चेन तोड़ ली।

खेड़ी तलवाना में माता मार्गपुर वाली का मेला 6 को

कनीना। कनीना दादरी मार्ग स्थित खेड़ी तलवाना में आगामी छह अप्रैल को माता मार्गुपर वाली के धार्मिक मेले का आयोजन किया जाएगा। बाबा भोलागिरी आश्रम के महंत श्यामगिरी ने बताया कि मेले में रात्रि रागिनी कंपीटीशन होगा। जिसमें प्रसिद्ध गायक कलाकार सतपाल भाटी, शिल्पा तिवारी, रचना तिवारी, पूजा शर्मा, संजू, देवेंद्र व रामखिलारी श्रोताओं का मनोरंजन करेंगे। मंदिर में सुबह सवा आठ बजे हवन होगा। इसके बाद 10 बजे रागिनी कंपीटीशन व सवा 10 बजे भंडारा प्रारंभ होगा। 21 हजार रपये तक की कुश्ती भी होगी।

कनीना क्षेत्र में शातिपूर्वक मनाया फाग उत्सव

कनीना। क्षेत्र में होली का पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। ग्रामीण क्षेत्र में ग्रामीणों ने उत्साह पूर्वक रंग उत्सव में हिस्सा लिया। बच्चों तथा युवाओं ने रंग गुलाल के साथ होली खेली। गुढ़ा गांव में युवाओं ने पिचकारी व गुलाल के साथ फाग उत्सव मनाया। होली के हुड़दंग को रोकने के लिए सदर व सिटी थाना पुलिस कर्मचारी लगातार नजर बनाए हुए थे। डीएसपी दिनेश कुमार ने बताया कि पुलिस की सतर्कता से क्षेत्र में होली का त्योहार शांतिपूर्वक मना। किसी गांव से अप्रिय घटना के समाचार नहीं हैं।

22 लाभार्थी को मिलने लगी पेंशन, अब बकाया के लिए सीएम विंडो में दस्तक

जिंदा है या नहीं सवाल पर धौलेड़ा बैंक ने लिखा 'नो', मेघोत हाला के कई पेंशनधारियों को नहीं मिल पा रही थी बुढ़ापा पेंशन

- विभाग ने मामले की जांच की तो सर्व हरियाणा ग्रामीण बैंक शाखा धौलेड़ा की मिली कमी, अब सीआरआईडी में डाटा अपडेट होने का हो रहा इंतजार

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

जिंदा है या नहीं सवाल पर धौलेड़ा बैंक ने लिखा 'नो', दस माह से मेघोत हाला के 23 पेंशनधारियों को नहीं मिली पेंशन

नारनौल। तीन दिसम्बर को प्रकाशित समाचार।

नांगल चौधरी क्षेत्र में गांव मेघोत हाला है। यहां फरवरी 2024 में कई पेंशनधारियों की अचानक पेंशन कट गई। जब पेंशन राशि नहीं मिली तो हताश होकर इन पीड़ितों ने नारनौल आकर पेंशन विभाग में संपर्क साधा। उस वक्त इनके पास भी पेंशन नहीं मिलने का कोई जवाब नहीं था। इस दौरान लोकसभा व विधानसभा चुनाव हो गए। इन दोनों चुनाव में इस गांव से पेंशन कटने का मुद्दा विपक्षी राजनीति पार्टियों ने खूब भुनाया। बावजूद अभी तक भी 23 ऐसे पेंशनधारक है, जिन्हें 10 माह बीत जाने के बाद भी पेंशन नहीं मिली है। उपायुक्त, अतिरिक्त उपायुक्त, पेंशन विभाग के अलावा सत्ताधारी नेताओं के द्वार पर भी यह पीड़ित दस्तक दे चुके है। जब इस मामले के पीछे कारणों को खोजा गया तो सामने आया कि इस गांव के लोगों की पेंशन सर्व हरियाणा ग्रामीण बैंक शाखा धौलेड़ा के अधीन है। यहां बैंक स्टाफ ने जिसकी ड्यूटी लगाई, उसने अपनी रिपोर्ट में 'जिंदा है या नहीं' वाले कॉलम में इनके आगे 'नो' लिख दिया। इस वजह से लोगों की पेंशन कट गई। पेंशन विभाग की इस जांच को चंडीगढ़ सब्मिट भी कर दिया। इसके बाद इस साल के जनवरी माह की पेंशन फरवरी माह में मिली है। अब इन पीड़ित पेंशनधारियों ने बकाया पेंशन राशि लेने के लिए सीएम विंडो में शिकायत दी है।

यह है शिकायत

नांगल चौधरी क्षेत्र में गांव मेघोत हाला है। यहां के पूर्व सरपंच पन्नालाल बताते है कि फरवरी 2024 में गांव के कई पेंशनधारकों की पेंशन काट दी गई। इनमें इस समय भी दो विकलांग, चार बुढ़ापा पेंशन और 16 विधवा पेंशन धारक शामिल है, जिन्हें 11 माह की पेंशन नहीं मिली है। इनमें कृष्ण कुमार पुत्र छोटेलाल, रामेश्वर पुत्र औमकार, भगवानी पत्नी छोटेलाल, बिमला पत्नी बलवंत, भतेरी पत्नी दयानंद, बिमला पत्नी महाराम, चमेली पत्नी कैलाश, कमला पत्नी महावीर, मनभरी पत्नी सुल्तान, मनिता पत्नी योगेश, मेवली पत्नी हेतराम, रेवती पत्नी हरसहाय, सरवती पत्नी बनवारी, सावित्री पत्नी प्रभातीलाल, सावित्री पत्नी हरिसिंह, सावित्री पत्नी राजेंद्र, सुभाष पत्नी झब्बूराम, प्रभुदयाल पुत्र भोलाराम, चमेली पत्नी प्रभुदयाल, छोटा देवी पत्नी महेंद्र कुमार व सरती पत्नी हरिराम शामिल है। पूर्व सरपंच ने बताया कि फरवरी 2024 से 11 महीनों से विधवा, विकलांग व वृद्ध पेंशन नहीं मिली थी लेकिन प्रदेश सरकार ने उक्त पेंशनधारियों की पेंशन जनवरी 2025 की जो फरवरी में आई है व एक महीने की दी गई है जबकि फरवरी 2024 से दिसम्बर 2024 तक की पेंशन पेंडिंग है। उन्होंने सीम विंडो में शिकायत देकर इन लाभार्थियों की फरवरी 2024 से दिसम्बर 2024 तक जो पेंशन राशि बकाया है, उसको जल्द से जल्द दिलाने की मांग की है।

मास्टर जयनारायण सांस्कृतिक मंच ने महामूर्ख सम्मलेन किया आयोजित

कवियों ने प्रेम, हास्य और व्यंग्य की कविताओं के द्वारा समा बांधा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

हमारी संस्कृति और संस्कारों के संवाहक होते हैं ऐसे कार्यक्रमः रामबिलास शर्मा

महेंद्रगढ़। पुस्तक विमोचन करते कविगण एवं पूर्व मंत्री प्रो. रामबिलास शर्मा। फोटो : हरिभूमि

मास्टर जयनारायण सांस्कृतिक मंच की ओर से श्री रामलीला परिषद् के रंगमंच पर होली के पावन पर्व पर शुक्रवार को 56वां महामूर्ख सम्मेलन आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में महामूर्खाधीश की भूमिका में सुधीर दीवान रहे। कार्यक्रम में भाजपा के वरिष्ठ नेता एवं पूर्व शिक्षामंत्री प्रो. रामबिलास शर्मा ने बतौर मुख्यातिथि शिरकत की, जबकि भाजपा नेता कुलदीप यादव ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। इस हास्य कवि सम्मेलन में देशभर से आए कवियों ने प्रेम, हास्य और व्यंग्य की कविताओं के द्वारा समा बांधा। भारी बारिश में भी श्रोताओं के कार्यक्रम के डटे रहने की कवियों ने मंच से सराहना की। कवियों ने अपनी कविताओं के माध्यम से राजनीतिक और सामाजिक बुराइयों पर भी कड़ा प्रहार किया। मूर्खाधीश को घोड़ी पर बैठाकर बैंड-बाजे के साथ भगवान परशुराम चौक से रामलीला परिषद तक लाया गया। इस दौरान प्रसिद्ध कवि सुरेश मक्कड़ साहिल द्वारा हरियाणवी भाषा में लिखी गई पुस्तक गजब करै सै का विमोचन भी किया गया। साहिल ने अपनी पुस्तक में लिखी हरियाणवी कविताओं को सुनाकर श्रोताओं को खूब वाह वाही बंटोरी। धुलंडी के अवसर क्षेत्र के प्रसिद्ध मंचकार रहे मा. जयनारायण की स्मृति में हर वर्ष महामूर्ख सम्मेलन आयोजित किया जाता है। मंच संरक्षक सुधीर दीवान, प्रधान नरेश जोशी, सचिव अशोक यादव ने मुख्यातिथी और विशिष्ठ अतिथि का पगड़ी पहनाकर सम्मान किया। कार्यक्रम का मंच संचालन पत्रकार सुशील शर्मा बिढ़ाट ने किया। कार्यक्रम का आगाज मध्यप्रदेश के जबलपुर जिले से आईं कवयित्री मणिकादुबे ने सरस्वती वंदना से किया। इसके बाद ग्वालियर से प्रसिद्ध कवि तेजनारायण शर्मा ने इस भव्य हास्य कवि सम्मेलन का संचालन करते हुए हास्य व्यंग्य से उपस्थित श्रोताओं को लोटपोट कर दिया। काव्य पाठ के लिए सबसे पहले मध्यप्रदेश के ब्यावरा से पधारे हास्य कवि मनीष गोस्वामी ने प्यार की किताब पाकर मजे लेने हैं तो फटे हुए पेज मत देखिए बुढ़ापे का जोश मदहोश कर देता है तो आदमी की ऐज मत देखिए कविता ने खूब वाहवाही लूटी। उत्तर प्रदेश के बहराइच से आए गजल गायक शरफ नानापारवी ने चांद के साथ रोशनी के लिए, एक सितारा बहुत जरूरी है, अपनी सुंदर रचना की प्रस्तुति दी। वहीं उनका प्रसिद्ध गीत ये मेरा दिल है मेरी जान, ये मेरा प्यारा हिंदुस्तान ने खूब तालियां बंटौरी। इसके बाद मध्यप्रदेश के शाजपुर से दिनेश देसी घी ने अपनी व्यांग्यत्मक कविताओं से सबको लोटपोट कर दिया। मूसालाधार बारिश होने पर भी उन्होंने सम्मेलन में समां बांधे रखा। उन्होंने तेरी पलक झपकी कि योगी गुंडो की गाड़ी टपकी जबरदस्त रचना पेश की। इसके बाद उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी के काम को लेकर कविता प्रस्तुत की। उन्होंने अपनी पंक्तियों में दोनों की तारीफ करते हुए एक को कर्म दीवाना और योगी को धर्म का दीवाना बताया। मध्यप्रदेश राज्य के जबलपुर जिले से आईं प्रेम कवयित्री मणिकादुबे ने अपनी कविता पिया मोहै धीरे रंग लगाओ।

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर एबीवीपी के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष प्रमोद शास्त्री, चेतना प्रकाश गौड़, रामावतार शास्त्री, अमित शर्मा अटेला, वरिष्ठ एडवोकेट राकेश मेहता नारनौल, बसंत गोयल, व्यापार मंडल प्रधान सुरेंद्र बंटी, भाजपा के जिला महामंत्री अमित मिश्रा, नरेश चेयरमैन, गीता विज्ञान प्रचार समिति प्रधान मुकेश मेहता, सुरेश लवानिया, ब्राह्मण सभा पूर्व प्रधान राजेश दिवान, हरियाणा कला परिषद के पूर्व चेयरमैन महेश जोशी, राधा कृष्ण मक्कड़, सुकेश दीवान, सुभाष अग्रवाल हैप्पी स्कूल, वीरेंद्र उन्हानी, बादल यादव, राजपाल जांगड़ा, टैगोर स्कूल चेयरमैन बीएल यादव, अतुल दीवान, दलीप गोस्वामी, राजेश, मयंक लवानिया, अग्रवाल सभा के पूर्व प्रधान शिवशंकर गर्ग सीबी, सुकेश दीवान सहित अनेक लोग उपस्थित रहे।

महेंद्रगढ़। ग्राहकों को जागरूक करते एएफएसओ ध्यान सिंह। फोटो : हरिभूमि

खाद्य आपूर्ति कार्यालय में मनाया विश्व उपभोक्ता दिवस

- ग्राहकों के साथ फ्रॉड होने की स्थिति में जानकारी दी गई

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

खाद्य एवं पूर्ति विभाग कार्यालय में शनिवार को विश्व उपभोक्ता दिवस मनाया गया, जिसमें ग्राहकों को उनके अधिकारों के बारे में जागरूक किया गया। ग्राहकों के साथ फ्रॉड होने की स्थिति में कहां शिकायत करें, इसको लेकर भी जानकारी दी गई।

इस दौरान हरियाणा सरकार की योजना हर घर हर ग्रहिणी के बारे में उपोभक्तों को विस्तार से बताया गया तथा अपना रजिस्ट्रेशन करवाने के लिए जागरूक किया गया। एएफएसओ ध्यान सिंह ने बताया कि जेएफ कनेडी ने 1983 में पहली बार अमेरिकन कांग्रेस के सामने उपभोक्ताओं के अधिकारों की बात की थी। उसने चार अधिकारों के बारे में कहा था, जिसमें राइट-टू-बीहर्ड, राइट-टू-चूज, राइट-टू-सेफ्टी व राइट टू इंफॉर्मेशन शामिल है। एएफएसओ ने बताया कि भारत में पहली बार उपभोक्ता दिवस 1986 में मनाया गया था। तब से हर वर्ष उपभोक्ता दिवस पर लोगों को उनके अधिकारों के बारे में जागरूक किया जाता है। हर वर्ष विश्व उपभोक्ता दिवस की कोई थीम होती है। उन्होंने बताया कि अगर किसी कंज्यूमर के साथ कोई फ्रॉड होता है या दुकानदार सामान खराब होने पर उसे नहीं बदलता तो उसके खिलाफ कंज्यूमर कोर्ट में शिकायत कर सकते है। जिला स्तर पर एक करोड़, राज्य स्तर पर 10 करोड़ व नेशनल स्तर पर 10 करोड़ से अधिक के मामले की शिकायत की जा सकती है। न्यू पब्लिक मैनेजमेंट ने उपभोक्ता को किंग की संज्ञा दी है।

एएफएसओ ने बताया कि अगर किसी के साथ कोई धोखाधड़ी होती है तो वह शिकायत कर सकते है। विभाग के पास राशन की गुणवत्ता से संबंधित शिकायत आती है, जिनका समाधान किया जाता है। विभाग अपने स्तर पर उपभोक्ताओं के अधिकारों की रक्षा के लिए हर संभव प्रयास करता है।

इस मौके पर लीला कुमारी, भगवती देवी, रामबाबू, रमेश, छाटूराम, चंदन, राकेश कुमार, रमेश, अवधेश, श्रवण कुमार, बिट्टू कुमार, दीपक, संजय, विकास कुमार, अशोक, नरेंद्र कुमार, पवन भारद्वाज व अजीत कुमार सहित समस्त स्टाफ मौजूद रहा।

एआईटी कॉलेज में होली मिलन समारोह आयोजित

कनीना। एआईटी फार्मेसी कॉलेज में होली के अवसर पर होली मिलन समारोह का आयोजन किया गया। सभी छात्र और कर्मचारी होली के अवसर पर रंग और गुलाल लगाकर एक-दूसरे को बधाई दी। संस्था अध्यक्ष विनय प्रकाश यादव ने सभी विद्यार्थियों और कर्मचारियों को होली की बधाई दी और साथ ही सभी को सुरक्षित तरीके से होली मनाने का संदेश दिया। कॉलेज प्राचार्य डॉ. संतोष पाटोदिया ने कहा कि होली का त्यौहार प्रेम और हर्ष उल्लास का प्रतीक होता हैं। इसलिए सभी को एक-दूसरे की भावनाओं का ध्यान रखकर होली का त्यौहार मनाना चाहिए। इस मौके पर रामभगत, नवनीत, विकास, कपिल, प्रियंका, संजीत सहित समस्त स्टाफ उपस्थित रहा।

ईमानदारी की मिसाल पेश करने पर सम्मानित

बिनोद श्यामपुरिया को सम्मानित करते सरपंच प्रतिनिधि व अन्य।

सतनाली मंडी। ट्रंक फैक्ट्री में रिपेयरिंग के लिए आई लोहे की अलमारी में रखे सोने चांदी के आभूषण गणमान्य लोगों की उपस्थित में सकुशल उसके मालिक को सौंप कर ईमानदारी की मिसाल पेश करने पर अलमारी मालिक व गणमान्य लोगों ने फैक्ट्री मालिक बिनोद श्यामपुरिया को सम्मानित किया। शनिवार को जयपाल सिंह, सरपंच प्रतिनिध धर्मबीर गोठवाल सहित अनेक गणमान्य लोगों ने बिनोद श्यापुरिया को सम्मानित किया। इस अवसर पर सागरमल यादव श्यामपुरा, लीलासिंह शेखावत, संतु शेखावत, महेश मिस्त्री, सुनील शेखावत, राहुल शर्मा, महावीर यादव, इंद्राज मिस्त्री, बालाजी सिंह शेखावत, प्रभातीलाल यादव, मांगेरामए गोरधन आदि ने बिनोद श्यापुरिया की ईमानदारी की प्रशंसा की। बिनोद श्यामपुरिया ने बताया कि सतनाली के जयपाल सिंह ने लोहे की अलवारी रिपेयरिंग के लिए उनकी दुकान पर भेजी थी।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
महेन्द्रगढ़ :- हरिभूमि कार्यालय, हुड्डा पार्क के सामने, डाक्टर भगत डेंटल अस्पताल वाली गली, नजदीक बस स्टैंड, महेंद्रगढ़।
नारनौल :- सत्य प्लाजा, प्रथम तल, तरूण कलर लैब वाली गली, नजदीक बस स्टैंड, नारनौल
फोन : 8295738500, 9253681005

भारत-रूस सांस्कृतिक एकजुटता के तहत 17 को कार्यक्रम

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

रूसी बैले, भारतीय फैशन शो और सांस्कृतिक आदान-प्रदान होंगे मुख्य आकर्षण

कला प्रेमी, छात्र, शोधकर्ता बड़ी संख्या में भाग लेंगे

इस फैशन-शो में भारत के विभिन्न राज्यों के पारंपरिक वस्त्र, आभूषण और लोक कलाओं की झलक देखने को मिलेगी, जिससे भारतीय संस्कृति की भव्यता दर्शकों के सामने उभरकर आएगी। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य भारत और रूस के बीच सांस्कृतिक संबंधों को और अधिक गहरा करना है। यह कार्यक्रम दोनों देशों के कलाकारों को एक-दूसरे की संस्कृति को समझने और साझा करने का एक सुनहरा अवसर प्रदान करेगा। भारत और रूस के बीच सदियों पुराने मजबूत सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक संबंध रहे हैं। इस प्रकार के सांस्कृतिक आयोजन न केवल इन संबंधों को और अधिक सुदृढ़ करते हैं, बल्कि दोनों देशों के युवाओं और कलाकारों को एक-दूसरे की परंपराओं से अवगत कराने का कार्य भी करते हैं। इस आयोजन में कला प्रेमी, छात्र, शोधकर्ता और स्थानीय गणमान्य व्यक्ति बड़ी संख्या में भाग लेंगे।

महेंद्रगढ़। कार्यक्रम में प्रस्तुति देते हुए का फाइल फोटो।

भारत और रूस के बीच सांस्कृतिक एकजुटता को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से नेशनल रिसर्च मोर्दोविया स्टेट यूनिवर्सिटी सारांक, रूस और आरपीएस ग्रुप आफ इंस्टीट्यूट के संयुक्त सहयोग से एक भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। यह आयोजन 17 मार्च को शाम छह बजे आरपीएम कॉलेज आफ वेटरनरी साइंसेज के आडिटोरियम में होगा। यह जानकारी न्यू एरा एजुकेशन के डायरेक्टर डॉ. धर्मेन्द्र कुमार ने दी। आरपीएस ग्रुप के रजिस्ट्रार डॉ. देवेंद्र यादव व डॉ. धर्मेन्द्र कुमार ने बताया कि मोर्दोविया स्टेट यूनिवर्सिटी एकमात्र ऐसी रूसी यूनिवर्सिटी है, जहां भारतीय सांस्कृतिक केंद्र स्थापित किया गया है। यह केंद्र भारत और रूस के बीच शैक्षिक और सांस्कृतिक संबंधों को प्रोत्साहित करता है और दोनों देशों के बीच एक मजबूत बौद्धिक एवं सांस्कृतिक पुल का कार्य करता है। उन्होंने बताया कि मोर्दोविया स्टेट यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर दिमित्री ग्लुश्को भारत-रूस के बीच सांस्कृतिक कार्यक्रम को लेकर अत्यंत गंभीर हैं और इस दिशा में कई महत्वपूर्ण प्रयास कर रहे हैं। उनकी पहल से दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक साझेदारी और मजबूत होगी। गौरतलब है कि आरपीएस ग्रुप व रस्शियन यूनिवर्सिटी के बीच आपसी शैक्षणिक सहयोग के लिए एमओयू है। डॉ. यादव ने बताया कि इस कार्यक्रम में मोर्दोविया स्टेट यूनिवर्सिटी और इंस्टीट्यूट आफ नेशनल कल्चर, रूस द्वारा प्रस्तुत विश्वप्रसिद्ध रूसी बैले डांस का प्रदर्शन किया जाएगा। रूसी बैले, रूस की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर का एक अभिन्न हिस्सा है, जिसकी जादुई प्रस्तुति दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देगी।

भूतपूर्व सैनिक विकास संघ की हुई बैठक

महेंद्रगढ़। यादव धर्मशाला के मुख्य सभागार में भूतपूर्व सैनिक विकास संघ प्रधान सूबेदार रामस्वरूप यादव की अध्यक्षता में मासिक बैठक आयोजित की गई। संघ उपाध्यक्ष कप्तान राजेंद्र सिंह खेड़ा ने बताया कि मासिक बैठक में पूर्व सैनिकों और वीरांगनाओं की पेंशन संबंधित समस्याओं का समाधान मौके पर ही किया गया। बैठक में आईसीआईसीआई बैंक के मैनेजर देवेंद्र कुमार एवं उनकी टीम के सदस्यों ने भी हिस्सा लिया तथा डिफेंस पेंशनर को बैंक द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं के बारे में अवगत कराया। पूर्व सैनिकों के सवालों के जवाब दिए ओर उनके डाउट दूर किए।

बोचड़िया गांव में प्रवासी राजमिस्त्री की पत्नी के साथ मारपीट, सीएम सेल में शिकायत

- सीएम ने निर्देश देकर पीड़ित की मदद करने का भरोसा दिया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| मंडी अटेली

मंडी अटेली। सीएम निवास चंडीगढ़ में अपनी शिकायत का पंजीकरण करवाते दंपती।

अटेली खंड के गांव बोचड़िया में रहने वाले प्रवासी राजमिस्त्री की पत्नी के इसी गांव के एक व्यक्ति द्वारा मारपीट, अभद्र व्यवहार व उसके जेवरात छीनने वाले पर कार्रवाई की मांग को लेकर पीड़ित दंपत्ति ने चंडीगढ़ स्थित सीएम निवास पर रजिस्ट्रेशन नंबर सीएमओ ऑफिस 2025-009231 के तहत न्याय की मांग को लेकर शिकायत दी है। दंपत्ति ने बताया कि सीएम ने जिले के सीएम को निर्देश देकर पीड़ित की मदद करने का भरोसा दिया है। प्रवासी श्रमिक लंबे समय से बोचड़िया में पिछले आठ वर्षों से राजमिस्त्री अपनी पत्नी के साथ मिलकर कार्य कर अपने परिवार का लालन पालन कर रहा है। इस घटना के नौ माह से न्याय की गुहार के लिए अनेक स्थानों पर चक्कर काटने को मजबूर है, लेकिन न्याय नहीं मिला है। बिहार के खगड़िया जिले के सुलेन यादव अपनी पत्नी पूनम देवी गांव बोचड़िया में राजमिस्त्री कार्य कर रहा है।

पीड़ित मिस्त्री ने बताया कि मारपीट करने वाले व्यक्ति द्वारा कार्रवाई नहीं होने पर वह अक्सर धमकी भी देता रहता है तथा उसके हौसले बुलंद होते जा रह हैं। 16 मई 2024 को वह बोचड़िया में राजमिस्त्री का कार्य करते समय गांव के एक 25 वर्षीय युवक ने उसकी पत्नी के साथ मारपीट करने के साथ ही कान की बाली सहित दूसरे जेवरात छीन लिए थे। उसके बाद वह नारनौल अस्पताल में उपचाराधीन रही, जहां चिकित्सों के एमएलआर भी काटी। गांव के सरपंच के पास उसी दिन अपनी शिकायत दर्ज प्रेषित की थी, सरपंच ने पुलिस का सहारा लेने की बात कही थी। उसके बाद अटेली थाना सहित दूसरे स्थानों पर न्याय के लिए वह पिछले आठ माह से अधिकारियों के चक्कर काट रही है, लेकिन उसे इंसाफ नहीं मिला है। उसके अब पाचं बच्चे हैं, जो गांव के सरकारी स्कूल में पढ़ते हैं।

लेफ्टिनेंट सुमित कुमार का गांव पहुंचने पर स्वागत

महेंद्रगढ़। गांव सुरजनवास निवासी सुमित कुमार ने लेफ्टिनेंट बनकर न केवल अपने परिवार बल्कि पूरे गांव व जिले का मान बढ़ाया, बल्कि जब वे अपनी इस उपलब्धि के साथ गांव लौटे तो ग्रामीणों ने भव्य स्वागत कर उन्हें सम्मानित किया। शहीद गेट पर पारंपरिक पगड़ी समारोह आयोजित किया गया। इसके बाद सुमित ने बाबा रूपदास मंदिर की यात्रा कर आशीर्वाद लिया। गांव की पंचायत ने विशेष कार्यक्रम आयोजित कर सुमित की इस ऐतिहासिक उपलब्धि का जश्न मनाया। इस दौरान उनके दादा शुभराम सिंह और दादी बसंती देवी को भी सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में बीआर ज्ञानदीप सीनियर सेकेंडरी स्कूल संस्थापक रामसिंह यादव, चेयरमैन रूपराम यादव, छोटेलाल, लालसिंह, अमीचंद, थानेदार राम अवतार, मास्टर मनोज कुमार, कप्तान हरपाल सिंह, पूर्व कमांडेंट लालचंद, पूर्व प्राचार्य राम अवतार यादव, रामकुमार, पूर्व कमांडेंट लालचंद, ब्लॉक चेयरपर्सन विजयलक्ष्मी और सरपंच संजय कुमार सहित अनेक लोगों ने भाग लिया। सभी ने सुमित का फूलों की माला और पारंपरिक पगड़ी के साथ गर्मजोशी से स्वागत किया। सुमित कुमार ने देश की सेवा के लिए एक शानदार कॉपोरेट करियर को त्यागकर भारतीय सेना का रुख किया। वे पहले जेपी मॉर्गन जैसी प्रतिष्ठित कंपनी में कार्यरत थे, लेकिन मातृभूमि के प्रति अपने कर्तव्य को सर्वोपरि मानते हुए सेना में शामिल होने का फैसला लिया। उनके पिता लेफ्टिनेंट कर्नल रामपाल सिंह वर्तमान में बंगाल इंजीनियर्स में एक सर्विंग आफिसर हैं।

हरिभूमि रविवार भारती
haribhoomi.com
हरियाणा, दिल्ली, छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक रविवार 16 मार्च 2025

आज के दौर में अकसर देखा जाता है कि अधिकतर युवा आपस में बातचीत के दौरान भाषा की मर्यादा का ध्यान नहीं रखते हैं। वे अपनी पर्सनालिटी को बिंदास दिखाने के लिए प्राय: ऐसा करते हैं। सच्चाई यह है कि इससे न केवल उनकी सोशल इमेज बिगड़ती है, वर्कप्लेस पर आगे बढ़ने की राह में भी ऐसी भाषा रुकावटें पैदा करती है। इसलिए संवाद के दौरान सजग रहना जरूरी है।

आपसी संवाद की भाषा हो मर्यादित-सकारात्मक-मधुर

कवर स्टोरी
डॉ. मोनिका शर्मा

वर्चुअल दुनिया में परोसे गए कंटेंट की अमर्यादित भाषा को लेकर चल रही बहस के बीच हर किसी के लिए सभ्य शब्दों का महत्व समझना आवश्यक है। आभासी संसार से कहीं ज्यादा, असली दुनिया में सधी संतुलित अभिव्यक्ति जरूरी है। खासकर कूल बनने और कमाल का व्यक्तित्व हो जाने की भूल-भुलैया के इस दौर में युवाओं को यह बात समझनी ही होगी। जरूरी है कि अपने वर्कप्लेस पर भी शब्दों की सभ्यता का दामन थामे रहें। सधी छवि और सफल भविष्य के लिए वर्कप्लेस पर सभ्य भाषा बहुत मायने रखती है।

शब्दों से जुड़ा सम्मान

काम-काजी संसार में किसी भी तरह के लिखित या मौखिक बातचीत में असभ्य शब्दों का इस्तेमाल करने से बचें। किसी भी परिस्थिति में न तो असभ्य शब्द लिखें और न ही बोलें। ध्यान रहे कि आपके शब्दों से स्वयं का सम्मान भी जुड़ा है। यह न भूलें कि दूसरों के मन और मान को ठेस पहुंचाने वाले शब्द इस्तेमाल करने वाले खुद भी किसी से इज्जत नहीं पाते हैं। बावजूद इसके ऑफिस में भी ह्यूमर के नाम पर किसी सहकर्मी या सहायक स्टाफ की हंसी

उड़ाने की गलती बहुत से लोग करते हैं। इस तरह के असामान्य और कुंठाग्रस्त व्यवहार के घेरे में आने से बचने के लिए पहले ही कदम पर सजगता जरूरी है। वरना जाने-अनजाने कुछ भी कह-सुना देने की आदत बनती जाती है। बिना सोचे-समझे मुंह से अभद्र शब्द निकलने लगते हैं। करियर को नुकसान पहुंचाने वाली यह आदत खुद आपको भी एक कुंठित व्यक्तित्व ही देती है। जोश भरे युवाओं को हर पल याद रखना चाहिए कि काम-काजी दुनिया में अनुशासित रहना बहुत आवश्यक है। अच्छी भाषा, इसी अनुशासन का हिस्सा है। अनुशासन के दायरे में रहते हुए सदा सकारात्मक ढंग से बातचीत करने की राह चुनने में ही समझदारी है। किसी के साथ भी असभ्य संवाद करने से पहले याद रखिए कि ये शब्द स्वयं आपके सम्मान से भी जुड़े हैं।

संवाद से जुड़ा कारगर फॉर्मूला

प्रसिद्ध शोधकर्ता अल्बर्ट मेहराबियन द्वारा दिए गए 55-38-7 का फॉर्मूला बताता है कि कम्युनिकेशन 55 फीसदी नॉन वर्बल (शारीरिक भाषा यानी हाव-भाव) और 38 प्रतिशत वोकल (स्वर के द्वारा) होता है। संवाद में सिर्फ 7 फीसदी हिस्सा ही वर्बल यानी शब्दों से प्रकट होता है कि आप वास्तव में क्या कहते हैं? ऐसे में मजाक हो या प्रतिक्रिया देना, गलत शब्दों का इस्तेमाल आपकी अभिव्यक्ति की पूरी शृंखला ही बिगाड़ सकता है। इसलिए हर किसी को संवाद के दौरान अपने शब्दों के इस्तेमाल को लेकर पूरी तरह सजग रहना चाहिए।

इमेज पर पड़े बुरा प्रभाव

बातचीत में इस्तेमाल होने वाले अभद्र शब्द, इंसान की बॉडी लैंग्वेज भी बिगाड़ देते हैं। बोलने वाले के हाव-भाव को भी नेगेटिव रंगत में ढाल देते हैं। शब्दों पर कंट्रोल न करना, इंसान की बॉडी लैंग्वेज को अजीबो-गरीब बना देता है। समझना मुश्किल नहीं कि ऐसी सभी बातें व्यक्तित्व को गहराई से प्रभावित करती हैं। जो सीधे-सीधे वर्कप्लेस पर आपकी इमेज बिगाड़ने वाली साबित होती हैं। वहीं सोच-समझकर बोलना, न केवल आपका फर्स्ट इंप्रेशन पॉजिटिव बनाता है बल्कि आगे भी आपकी सकारात्मक छवि को कायम रखता है। सोशल लाइफ हो या प्रोफेशनल, सोशल एटिकेट्स हमेशा मायने रखते हैं। आपको यह समझना चाहिए कि बातचीत में गलत शब्दों का चुनाव, आपको असहयोगी और अकड़ू व्यक्ति का तमगा दिलाने वाला बर्ताव साबित हो सकता है।

बेहतरी के लिए सही भाषा जरूरी

काम-काजी दुनिया में आपसे जुड़े सीनियर हों या जूनियर, सही सोच और अच्छे मैनर्स से सबका दिल जीता जा सकता है। स्पष्ट है कि इससे करियर में आगे बढ़ने में भी मदद मिलती है। बेहतर प्रोजेक्ट्स आपके हिस्से आते हैं। इतना ही नहीं सभ्य भाषा और सधा बर्ताव कई बार आपको किसी तकलीफ में फंसने से भी बचा लेता है। सहकर्मियों के साथ किया गया मीनिंगफुल और माइंडफुल संवाद काम-काज के लिए पॉजिटिव परिवेश बनाता है, जिसके चलते लोगों का दिल जीतने के साथ-साथ कामयाबी भी आपके हिस्से आती है। मन जीतने के इन सभी मोर्चों पर अच्छी भाषा सबसे ज्यादा मायने रखती है। असल में देखा जाए तो सकारात्मक शब्दों और सभ्य बोलचाल के प्रभाव का यह सिलसिला इंटरव्यू से ही शुरू हो जाता है। बावजूद इसके युवाओं की अजीबो-गरीब भाषा शैली आज चिंता का विषय बन गई है। मनोवैज्ञानिक विश्लेषणों में भी सामने आया है कि आमतौर पर युवा बेझिझक अपशब्दों का इस्तेमाल करते हैं। इस बर्ताव के पीछे मौजूद साइकोलॉजिकल कारण बताते हैं कि आज की युवा पीढ़ी बोलने या करने से पहले कुछ नहीं सोचती। साथ ही वे इस बात से भी प्रभावित नहीं होते कि कोई उनके बारे में क्या सोचेगा? या उनके बोले शब्दों का किसी पर क्या प्रभाव पड़ेगा? सच्चाई यह है कि जीवन का कोई पक्ष, अशिष्ट शब्दों के नकारात्मक असर से नहीं बच पाता है। जरूरी है कि युवा आज के दौर में बढ़ती शाब्दिक अभद्रता की संस्कृति से बचें। दफ्तर में भावों, विचारों और सूचनाओं का आदान-प्रदान करते हुए संयत और सभ्य शब्दों का चुनाव करें। सधे व्यक्तित्व की सौगात देने वाला यह व्यवहार आपके लिए सदा ही बेहतरी के मार्ग खोलने वाला साबित होगा। *

इन दिनों आप अकसर बातचीत के दौरान अलग-अलग पीढ़ियों के लिए कुछ खास नाम सुनते होंगे, जैसे जेन एक्स, मिलेनियल, जेन जेड, बेबी ब्लूमर्स आदि। आपके मन में सवाल उठता होगा कि आखिर ये नाम कैसे रखे जाते हैं? इनकी क्या विशेषताएं हैं? आइए, इन सभी सवालों के जवाब जानते हैं।

एक-दूसरे से अलग-अनोखी है हर जेनरेशन की कहानी

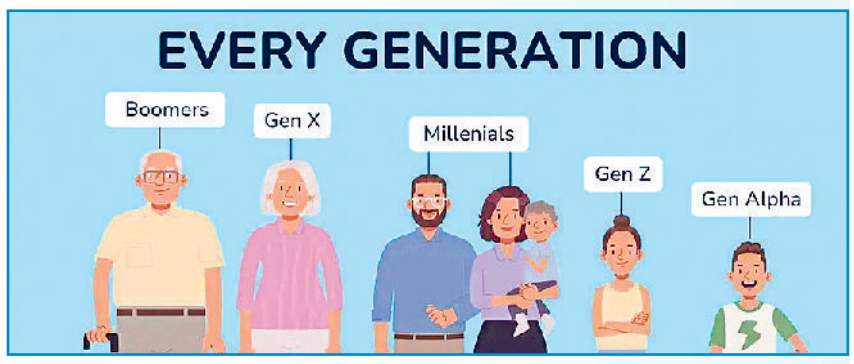

सोशल ट्रेंड
शिखर चंद जैन

एक समय तक आम चलन में नई और पुरानी पीढ़ी का ही जिक्र किया जाता रहा है। लेकिन अब अलग-अलग पीढ़ी को अलग नामों से भी जाना जाता है। इनका चलन हाल के सालों में तेजी से बढ़ा है।

कैसे तय होता है पीढ़ियों का नाम: पीढ़ियों का नाम तय करना, श्रमसाध्य, विचारपरक और कई चीजों पर आधारित एक जटिल प्रक्रिया है। यह एकेडमिक अनुसंधान, मीडिया के प्रभाव और सांस्कृतिक प्रभाव पर निर्भर करता है। जनसांख्यिक और समाजशास्त्री जनसंख्या सर्वेक्षणों, जन्म दरों और सामाजिक परिवर्तनों की पहचान के आधार पर ये नामकरण करते हैं। हां, इसे लोकप्रिय और प्रचलित करने का काम मीडिया का होता है।

नया ट्रेंड है पीढ़ियों का नामकरण: पीढ़ियों के नामकरण और श्रेणीबद्ध करने की परंपरा बहुत पुरानी नहीं है। 20वीं सदी की शुरुआत में इसका चलन शुरू हुआ है। इस वक्त जनसांख्यिकों और समाजशास्त्रियों ने जनसंख्या का विश्लेषण और सामाजिक बदलाव को दर्ज करना शुरू कर दिया था। पीढ़ियों के नाम महत्वपूर्ण सामाजिक, सांस्कृतिक घटनाओं, विभिन्न आयु वर्ग की आदतों और समय विशेष पर आधारित होने लगे। अब आपको बताते हैं, अब तक की अलग-अलग पीढ़ियों के नामकरण के बारे में।

बेबी बूमर्स: वर्ष 1946 से 1964 के बीच जन्मे बच्चों को बेबी बूमर्स कहा गया। दरअसल, द्वितीय विश्व युद्ध के बाद एक बेबी बूम आया था, जब दुनिया में जन्म दर में उल्लेखनीय वृद्धि हुई थी। इस पीढ़ी ने 60 के दशक के बड़े सामाजिक परिवर्तन देखे। इसी दौरान कार्पोरेट जगत का उदय हुआ और और लोगों की जीवनशैली पर इस संस्कृति का खासा प्रभाव पड़ा। उस दौर के लोग आज सीनियर सिटिजन हो चुके हैं।

जेनरेशन एक्स: 1965 से 1980 के बीच जन्मे बच्चे, जेनरेशन एक्स कहलाते हैं। इस दरमियान समाज में कोई उल्लेखनीय और व्यापक परिवर्तन नहीं हुए। यद्यपि उस पीढ़ी के बच्चों ने पर्सनल कंप्यूटर का उद्भव होते देखा है। उस दौर के लोग अब मिड एज क्रॉस कर ओल्ड एज की ओर बढ़ रहे हैं।

मिलेनियल/जेन वाई: 1981 से 1996 के बीच जन्मे बच्चों को मिलेनियल कहा जाता है। उस पीढ़ी के लोगों ने 'मी जेनरेशन' या 'ईको बूमर्स' भी कहा जाता है। उस पीढ़ी को अपने में ही डूबे रहने, एकलवाद, डिजिटल टेक्नोलॉजी की जानकार और आर्थिक रूप से संपन्न माना गया। ये पीढ़ी मैटीरियल पजेजन से ज्यादा एक्सपीरियंस को महत्व देती थी।

जेनरेशन जेड: 1990 के मध्य से 2010 तक के दशक की शुरुआत तक जन्मी पीढ़ी को जेन जेड कहा जाता है। इस पीढ़ी को इसकी ग्लोबल कनेक्टिविटी और एंटरप्रेन्योरल स्पिरिट के लिए जाना जाता है। इन्हें कहीं-कहीं आई जेनरेशन और डिजिटल नेटिव्स भी कहा जाता है। इस पीढ़ी के बच्चे स्मार्टफोन, सोशल मीडिया और सूचनाओं के त्वरित ग्रहण और उसे दूसरों तक प्रसारित करने के लिए जाने जाते हैं। ये पीढ़ी अभी युवावस्था से गुजर रही है।

जेनरेशन अल्फा: 2010 से 2024 के बीच जन्मे बच्चे जेनरेशन अल्फा के बच्चे कहलाते हैं। अल्फा 21वीं सदी की पहली पीढ़ी कही जा सकती है। यह पीढ़ी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ऑगमेंटेड रियलिटी और स्मार्ट टेक्नोलॉजी के साए में जन्मी, पली और बड़ी हुई है। उनकी शिक्षा, खेलकूद, एंटरटेनमेंट सब कुछ टेक्नोलॉजी से अत्यधिक प्रभावित है। यह पीढ़ी अभी टीनएज से गुजर रही है। इसके बाद इसी साल एक जनवरी 2025 के बाद से जन्म लेने वाली पीढ़ी को जेन बीटा का मेंबर माना जा रहा है। इनके जीवन के हर पक्ष में तकनीक का जबर्दस्त प्रभाव दिखेगा।

एक पीढ़ी के गुणों में समानता: यह एक जटिल प्रश्न है कि क्या दुनिया भर में जन्मे एक पीढ़ी के लोगों में समानता होती है? यह काफी कुछ दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में घटने वाली घटनाओं, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, वातावरण एवं सामाजिक ढांचे पर निर्भर करता है। लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं कि इंटरनेट युग में जन्मी ग्लोबल युवा पीढ़ी के बहुत सारे गुण और आदतें लगभग एक समान होते हैं। *

क्या है सैंडविच पीढ़ी

सैंडविच पीढ़ी का अर्थ मध्यम आयु वर्ग यानी 45 से 55 वर्ष के इर्द-गिर्द के व्यक्तियों से है। इन पर अपने बुजुर्ग माता-पिता और युवा बच्चों दोनों का भरण-पोषण करने की जिम्मेदारी है। सैंडविच पीढ़ी का नाम इसलिए रखा गया है, क्योंकि वे अपने बूढ़े माता-पिता की देखभाल करने के दायित्व और किशोरावस्था से युवा होते बच्चों की नई-नई फरमाइशों और चाहतों के बीच 'सैंडविच' जैसी स्थिति में होते हैं। ये कम ऊर्जावान, थके-थके से या बीमारियों से जूझने वाले हो सकते हैं। विभिन्न कार्य करने में असमर्थ हो सकते हैं या इनका वित्तीय रुप से अकसर हाथ तंग हो सकता है। इन्हें इस उलझन से गुजरना पड़ता है कि मां-बाप के लिए दवा और तीर्थाटन की व्यवस्था करें या बच्चों को महंगे गैजेट्स और ब्रांडेड कपड़े खरीदकर दें।

गजल
अब्दुल कलाम

हम अमर होते

सुबह शाम उनकी नजर होते
आइना काश हम अगर होते

तुरबतें अपनी भी बाकमाल होती
हम जो मीर, गालिब या जफर होते

खत में पता ही गलत था वरना
गए हम भी उनके शहर होते

बैठ जाते घनी छांव में थक कर
हमारे जीवन का जो तुम शजर होते

तुम्हारी याद में जीते और याद में
मर कर भी हम अमर होते

तुमने देखा ही नहीं उस रोज का अखबार
वरना हमारे हाल से तुम बाखबर होते

छोटी कहानी
सुनील कुमार महला

शर्मिंदा

ऑटो रिक्शा में अनिल के बगल में आकर वह व्यक्ति जैसे ही बैठा, उसने अपना एक हाथ अनिल के बैग पर रख दिया। अनिल ने उसे ऐसा करने से मना किया। लेकिन उस आदमी ने हाथ रखने की जो वजह बताई, अनिल खुद पर शर्मिंदा हो गया।

रेलवे स्टेशन के बाहर खड़ा अनिल, बस स्टैंड जाने के लिए ऑटो रिक्शा का इंतजार कर रहा था। तभी एक ऑटो रिक्शा वाला तीस रुपए में बस स्टैंड जाने के लिए तैयार हो गया। अनिल ने अपने दो भारी-भरकम बैग ऑटो रिक्शा में रखे और स्वयं भी उसमें सवार हो गया। ऑटो रिक्शा में अनिल अकेला ही बैठा था। जब कोई अन्य सवारी ऑटो में बैठने नहीं आई तो उसने अपने एक बैग को ऑटो रिक्शा की सीट पर ही रख दिया, ताकि पैरों के पास सामान रखने से उसे ऑटो रिक्शा में बैठने में कोई दिक्कत-परेशानी न हो। शाम का समय था, ठंडी हवाएं चल रही थीं, इसलिए अनिल ने अपने चेहरे को मफलर से ढंक रखा था। ऑटो रिक्शा वाला अभी एक अन्य सवारी के इंतजार में था। थोड़ी देर में एक लंबा व्यक्ति, जो कंबल ओढ़े हुआ था, बस स्टैंड जाने के लिए उसी ऑटो रिक्शा के पास आया। ऑटो रिक्शा वाले ने उस व्यक्ति को भी ऑटो में बिठाया। वह लंबा व्यक्ति ऑटो रिक्शा में उस साइड में बैठ गया, जिधर सीट पर अनिल का सामान से भरा हुआ भारी-भरकम बैग रखा हुआ था। ऑटो रिक्शा में सवार होते ही कंबल ओढ़े हुए उस व्यक्ति ने अपना दायां हाथ बैग के ऊपर रख दिया और संभल कर बैठ गया। ऑटो रिक्शा वाला गंतव्य की ओर चल पड़ा। तभी अनिल ने ऑटो रिक्शा में बैठे उस व्यक्ति की ओर देखते हुए थोड़ा गुस्से में कहा, 'भाई साहब! जरा ध्यान से बैठें और हां, बैग को इतना दबाव देते हुए न पकड़ें। दरअसल, बैग में बच्चों के लिए कुछ टूटने वाला कीमती सामान रखा हुआ है और आपके हाथ के दबाव से इसमें रखा सामान टूट सकता है।'

कंबल ओढ़े हुए वह व्यक्ति अनिल की बात सुनकर एकदम से सकपका गया, उसने अनिल से कहा, 'अरे भाई साहब मुझसे गलती हो गई! मुझे नहीं पता था कि इसमें आपका कुछ टूटने वाला कीमती सामान रखा हुआ है। दरअसल, वो क्या है कि मेरा एक ही हाथ है न! ऑटो रिक्शा जब ऊबड़-खाबड़ सड़क पर तेजी से चलता है, तब एकदम से ऑटो रिक्शा में अपना बैलेंस बनाना मुश्किल होता है इसलिए, थोड़ा सहारा लेने के लिए, भूलवश मैंने आपके सामान से भरे बैग पर अपना हाथ रख दिया। इसके लिए मुझे माफ कर दीजिए, मैं बहुत शर्मिंदा हूं।' उस व्यक्ति की ये बातें सुनकर अनिल उसे एकटक देखता ही रह गया। दरअसल, अनिल ने कंबल ओढ़े व्यक्ति को ऑटो रिक्शा में बैठते समय एकबारगी देखा जरूर था, लेकिन उस व्यक्ति के कंबल ओढ़े रहने के कारण सुनील को इस बात का अहसास ही नहीं हुआ था कि जो व्यक्ति ऑटो में उसके साथ बैठा था, उसके एक ही हाथ है। अनिल अब अपने रूखे बर्ताव पर मन ही मन शर्मिंदा महसूस कर रहा था। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

मोहब्बत की दास्तानें

सारी दुनिया में मोहब्बत पर अब तक असंख्य कहानियां लिखी जा चुकी हैं। लेकिन यह ऐसा एहसास है, जिसे हर कोई अपनी तरह से महसूसता है, उसे बयां करता है। यह एहसास, वरिष्ठ कथाकार गोविंद उपाध्याय द्वारा लिखी गई पंद्रह प्रेम कहानियों के संकलन 'मितऊ' की कहानियों से गुजरते हुए और पुख्ता होता है। इन कहानियों में अलग-अलग उम्र और परिवेश के पुरुष और स्त्री के बीच पनपे प्यार के जज्बातों को पूरी संजीदगी से व्यक्त किया गया है। संग्रह की 'विकल्प' कहानी को अगर छोड़ दिया जाए तो अधिकतर में प्यार अपने अंजाम तक नहीं पहुंच पाता है। या कहें, सभी में अलग-अलग भावभूमि और जीवन-परिस्थितियों के आगे विवश, प्रेमी युगल विरह की टीस के साथ एक-दूसरे से अलग हो जाते हैं। इन कहानियों की विशेषता यह भी है कि इनके नायक-नायिकाओं में कहीं भी देहासक्ति नजर नहीं आती है, प्रेम की पवित्र भावना की गरिमा बनाए रखना उनके लिए सबसे बड़ी प्राथमिकता है। इसे कई कहानियों में देख सकते हैं। फिर वो चाहे 'मेज नंबर सात' का लाइब्रेरियन हो या 'चौथे पहर का विरह गीत' का पत्रकार, प्रेम की मर्यादा को कभी नहीं लांघते हैं। यही इन कहानियों की खूबसूरती भी है, जो इन्हें बेहद पठनीय बना देती है। *

पुस्तक: मितऊ (कहानी संग्रह), लेखक: गोविंद उपाध्याय, मूल्य: 250 रुपए, प्रकाशक: न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन, नई दिल्ली

लघुकथा
गोविंद भारद्वाज

बदलते हुए मायने

अपने बेटे के लिए सोनाक्षी को देखने आईं सावित्री ने कहा, 'आपकी बेटी सोनाक्षी हमें बहुत पसंद है, बस अब आपकी हां की जरूरत है।'

'हमारी तो हां है बहन जी... इसलिए तो आपको लड़की दिखाने के लिए बुलाया है।' पार्वती ने खुश होकर जवाब दिया।

'तो देर किस बात की है... मुंह मीठा कराइए...' सावित्री ने तपाक से कहा।

इस पर पार्वती ने विनम्रता से कहा, 'बहनजी रिश्ता पक्का करने से पहले दान-दहेज की भी खुल के बात कर लें तो ठीक रहेगा... ताकि आगे चलकर संबंधों में कोई खटास न आए।'

'बात तो आप ठीक कह रही हैं। इस बारे में मेरी राय यह है कि दहेज से तो हमें सख्त नफरत है... हां रही दान की बात, आप जितना भी देंगे अपनी इकलौती बिटिया को देंगे... इससे हमें कोई ऐतराज नहीं होगा।' सावित्री ने अपने मन की बात कही।

इस पर सोनाक्षी के पिताजी ने अपनी धर्मपत्नी पार्वती को दूसरे कमरे में बुलाया और उनसे धीरे से कहा, 'देखा पार्वती... कितनी चालाक हैं ये... दहेज से नफरत है और दान से नहीं... बातों-बातों में शब्दों के हेर-फेर से दहेज लेने की बात भी कह दी।'

पार्वती बोली, 'तुम ठीक कह रहे हो सोनाक्षी के पापा... मायने में तो दान और दहेज कोई अलग-अलग शब्द नहीं हैं।'

'क्या बातचीत हो रही है हमारे समधी-समधन में...' सावित्री ने उन्हें फुसफुसाते देखकर बाहर वाले कमरे से पूछा।

'कुछ नहीं बस, हम दुनिया के बदलते हुए मायने पर विचार कर रहे थे।' पार्वती ने जवाब दिया। *

संयुक्त अरब अमीरात का दुबई शहर, पूरी दुनिया में अपनी खूबसूरती और आधुनिक सुख-सुविधाओं के लिए जाना जाता है। इसे खूबसूरत बनाने के लिए शहर की व्यवस्थित प्लानिंग, प्रशासनतंत्र और स्थानीय लोगों का सामूहिक योगदान है। कुछ समय से दुबई में रह रहे लेखक ने वहां की खासियतों को स्वयं अनुभव किया है। उसी को बयां कर रहे हैं अपनी जुबानी।

आधुनिकता-विविधता को समेटे शानदार-खूबसूरत शहर दुबई

बेमिसाल
जोगिंदर रोहिल्ला

दुनिया के कई देशों में रहने और काम करने का अनुभव मुझे मिलता रहा है। फिलहाल दुबई में हूं। इस शहर की कई विशेषताएं ऐसी हैं, जो इसे दुनिया भर से अलग बनाती है। यह शहर आधुनिकता, विविधता और स्वच्छता का अनोखा संगम कहा जा सकता है। इस शहर की सड़कों से गुजरते हुए, मुझे इसकी हरियाली, चमचमाती गगनचुंबी इमारतें और अनुशासित जीवनशैली बहुत प्रभावित करती है। 'हरियाली' शब्द पढ़कर आप चौंक तो नहीं गए! दुबई तो संयुक्त अरब अमीरात में है, जो रेगिस्तानी इलाके के रूप में जाना जाता है। तो यहां हरियाली कैसे? शुरू-शुरू में मुझे भी यही आश्चर्य हुआ था, लेकिन सच यह है कि यहां के बहुत से रिहायशी इलाके बहुत ही व्यवस्थित ढंग से हरे-भरे नजर आते हैं।

इमारतों-सड़कों का आकर्षणः दुबई अपनी गगनचुंबी इमारतों और अद्वितीय वास्तुकला के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध है। बुर्ज खलीफा, जो दुनिया की सबसे ऊंची इमारत है, दुबई की पहचान बन चुकी है। लेकिन यही नहीं इस शहर की लगभग हर ऊंची इमारत में कोई न कोई ऐसी खासियत है, जो इसे अलग बनाती है। ये खूबसूरत-गगनचुंबी इमारतें न केवल आधुनिकता का प्रतीक हैं, बल्कि इनसे दुबई का भविष्य भी झांकता दिखाई देता है। दुबई शहर की मुख्य सड़क शेख जायद रोड, जिसके दोनों ओर शानदार इमारतें हैं, ऐसा स्थान है, जो शहर की गतिशीलता और ऊर्जा को भी दर्शाती है। रात के समय इमारतों की जगमगाती रोशनी और सड़कों पर दौड़ती गाड़ियां अत्याधुनिक शहर का मनमोहक दृश्य प्रस्तुत करती हैं।

मन मोहती स्वच्छताः दुबई में कदम रखते ही सबसे पहली बात, जो ध्यान आकर्षित करती है, वह है यहां की बेहतरीन स्वच्छता। चारों तरफ इतनी सफाई रहती है कि आप हैरान हो जाएंगे। मैं दुबई मरीना एरिया में कुछ दिन रहा और नोट किया कि सूरज निकलने से काफी पहले ही म्युनिसिपेलिटी के सफाई कर्मचारी अपने काम में लग जाते हैं और निश्चित करते हैं कि सफाई में कोई भी कमी न रहे। दुबई का हर कोना मानो, यह संदेश देता है कि स्वच्छता ही असली सुंदरता है।

सभी करते हैं नियमों का पालनः यातायात संबंधी कोई परेशानी यहां नजर नहीं आती है। सभी यातायात नियमों का पालन करते हैं। इन नियमों का पालन सुनिश्चित करने के लिए कड़े दंड का प्रावधान है। उदाहरण के लिए अगर आप सड़क पार करते समय निर्धारित स्थानों का उपयोग नहीं करते हैं तो आपको स्थानीय 400 दिरहम (एईडी) का जुर्माना भरना पड़ सकता है। यह न केवल लोगों को अनुशासित रहने के लिए प्रेरित करता है, बल्कि शहर की स्वच्छता और सुरक्षा बनाए रखने में भी मदद करता है। बहुत सारे विकसित देशों की तरह ही दुबई में भी सड़क पर पैदल चलने वाले लोगों को प्राथमिकता दी जाती है।

सी-बीच के लाजवाब नजारेः दुबई के समुद्र तट भी इसकी खासियतों में से एक हैं। साफ-सुथरे और व्यवस्थित समुद्र तटों पर समय बिताना किसी जादुई अनुभव से कम नहीं होता है। मुझे विशेष रूप से दुबई की बीच लाइब्रेरी बहुत पसंद आई। समुद्र किनारे किताबें पढ़ने का अनुभव अनोखा और सुकून भरा होता है। यह न केवल मनोरंजन का माध्यम है, बल्कि ज्ञानवर्धन का भी। इन तटों पर सुबह-सुबह की सैर और सूर्यास्त के समय का दृश्य मन को असीम शांति प्रदान करता है। दुबई स्थित मरीना बीच और जुमेराह बीच का साफ और व्यवस्थित वातावरण इसे और भी खास बनाता है। यहां आने वाले पर्यटकों के लिए विभिन्न प्रकार के वॉटर स्पोर्ट्स का आयोजन भी किया जाता है, जो पर्यटकों को बहुत आकर्षित करता है।

दिखती है अनेकता में एकताः दुबई शहर की एक विशेषता, यहां विविधताओं का अनोखा संगम भी है। यहां 100 से अधिक देशों के लोग मिल-जुलकर रहते हैं। अलग-अलग संस्कृति, भाषा और परंपराओं के बावजूद यहां के लोग एक-दूसरे का सम्मान करते हैं। इतनी विविधता के बावजूद, दुबई एकता की मिसाल कायम करने वाला शहर है। यहां की दुकानों और बाजारों में विभिन्न देशों के व्यंजन और उत्पाद आसानी से मिल जाते हैं, जो इस सांस्कृतिक समृद्धि को और भी उजागर करते हैं।

हर जगह दिखती है सुचारु व्यवस्थाः दुबई की सार्वजनिक सेवाएं भी बेजोड़ हैं। यहां की मेट्रो सेवा, बस सेवा और टैक्सी सेवा इतनी व्यवस्थित है कि किसी को भी यात्रा करने में कोई दिक्कत नहीं होती है। यहां का सार्वजनिक परिवहन इतना सुविधाजनक है कि आप बिना किसी परेशानी के शहर के कोने-कोने तक पहुंच सकते हैं। स्वास्थ्य सेवाएं और सरकारी कार्यालयों की कार्यप्रणाली इतनी तेज और प्रभावी है कि समय का सम्मान हर जगह नजर आता है।

दुनिया के कई देशों में घूमने के बाद, दुबई ने मुझे यह सिखाया है कि जब विविधता, अनुशासन और स्वच्छता का संगम होता है, तो एक बेहतर शहर-समाज का निर्माण होता है। *

बेमिसाल है मोहम्मद बिन राशिद लाइब्रेरी

दुबई में कोई पुस्तकप्रेमी पर्यटक आए और मोहम्मद बिन राशिद लाइब्रेरी न जाए, यह तो हो ही नहीं सकता है। वैसे भी मैं दुनिया में जिस भी नए शहर जाता हूं, वहां की लाइब्रेरी जरूर देखता हूं। लेकिन मोहम्मद बिन राशिद लाइब्रेरी को देखकर यही कहने को दिल करता है कि ऐसी लाइब्रेरी कोई और नहीं है। इस लाइब्रेरी की बिल्डिंग भी बुक शेप्ड है। यहां टेक्नोलॉजी और किताबों को बहुत ही अच्छे तरीके से एक जगह पर संजोया गया है। इस लाइब्रेरी में विभिन्न विषयों पर बेशुमार पुस्तकें और उनके डिजिटल फॉर्मेट्स बुक लवर्स के लिए उपलब्ध हैं।

यादगार नए साल का स्वागत

इस साल दुबई में नए साल (वर्ष 2025) का स्वागत करना मेरे जीवन का एक यादगार अनुभव रहा। मरीना बीच पर आतिशबाजी का शानदार प्रदर्शन, संगीत और खुशियों की गूंज ने इस पल को अविस्मरणीय बना दिया। नए साल के मौके पर सड़कों पर उमड़ी भीड़ और हर चेहरे पर खुशी की चमक इस शहर की जिंदादिली का प्रतीक थी। उसे देखकर यही लगा कि यहां उत्सवप्रेमी लोग खुशी के हर अवसर को उल्लास से भर देते हैं।

सेल्फ मोटिवेशन
अतुल मलिकराम

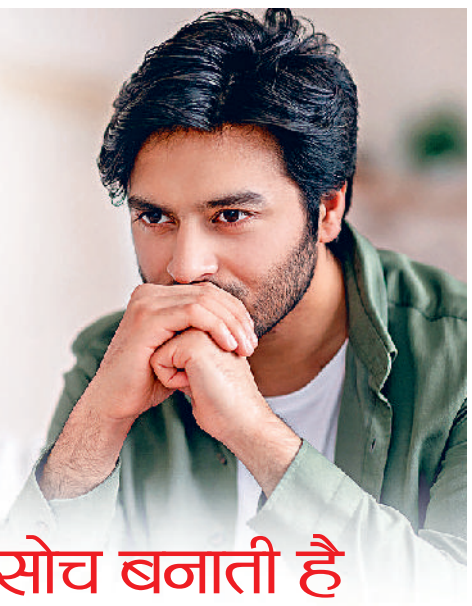

गरीबी केवल आर्थिक स्थिति नहीं होती है, यह एक मानसिकता का भी परिणाम होती है। जब तक हम अपनी सोच नहीं बदलते, तब तक अपनी स्थिति में बदलाव करना मुश्किल है। यह बदलाव कैसे संभव है, इसके लिए क्या जरूरी है, हमें जरूर जानना चाहिए।

पैसा नहीं सोच बनाती है हमें अमीर या गरीब

गरीबी, हमारे देश-समाज में एक ऐसी समस्या है, जिसे खत्म करने के लिए सबसे ज्यादा प्रयास किए गए। इसके लिए हर प्रकार की योजनाएं, कार्यक्रम और अभियान चलाए गए, फिर भी इस समस्या से छुटकारा नहीं पाया जा सका। इसका एक कारण यह है कि इस समस्या को केवल एक आर्थिक स्थिति मानकर ही इसका हल खोजा जाता रहा है, जबकि यह समस्या केवल आर्थिक अभाव की स्थिति नहीं है, बल्कि इससे बढ़कर यह एक मानसिक स्थिति भी है।

सोच रखती है मायनेः गरीब होना केवल पैसों की कमी का नाम नहीं होता है, बल्कि यह उस सोच का भी परिणाम है, जो किसी को गरीबी के जाल से बाहर निकलने से रोकती है। कई बार लोग गरीबी को केवल आर्थिक दृष्टिकोण से देखते हैं। उनके अनुसार, गरीबी मिटाने का समाधान केवल धन है। लेकिन, क्या सचमुच ऐसा है? यदि केवल आर्थिक मदद से गरीबी दूर हो सकती, तो अब तक दुनिया से गरीबी का नामो-निशान मिट चुका होता। लेकिन ऐसा नहीं हो सका है।

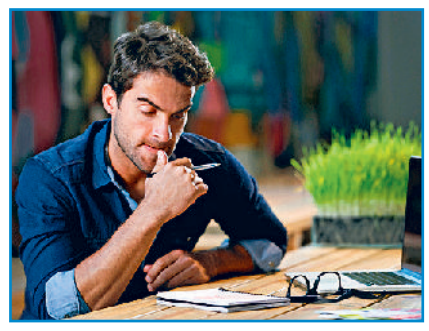

मानसिकता होती है जिम्मेदारः आर्थिक स्थिति के साथ-साथ गरीबी उस मानसिकता का परिणाम है, जिसमें इंसान अपने आप को परिस्थितियों का गुलाम मान लेता है। ऐसी सोच वाले लोग अपनी स्थिति को बदलने का प्रयास ही नहीं कर पाते। आपने कई बार देखा और सुना होगा कि कुछ परिवार पीढ़ी-दर-पीढ़ी गरीब रहते हैं। इसका कारण केवल आर्थिक संसाधनों की कमी नहीं है, बल्कि वह मानसिकता है, जो उनकी हर पीढ़ी को विरासत में मिलती है। बच्चे अपने परिवार के वातावरण और सोच को आत्मसात कर लेते हैं। जब वे अपने माता-पिता को यह कहते सुनते हैं, 'हम तो हमेशा से गरीब हैं', या 'गरीबी के साए में पलना-बढ़ना ही हमारी किस्मत में है', तो उनके मन ही नहीं, बल्कि जीवन में भी यही विश्वास घर कर जाता है। और यही विश्वास फिर धीरे-धीरे उनकी सोच और व्यवहार का हिस्सा बन जाता है। इस प्रकार, एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक यह मानसिकता हस्तांतरित होती रहती है और गरीबी नाम का यह साया और भी काला होता चला जाता है।

सही सोच से संभव है बदलावः गरीबी की कैद से बाहर निकलने के लिए केवल धन की आवश्यकता नहीं होती है। इसकी असली चाबी है सकारात्मक सोच और दृढ़ संकल्प। वे ही लोग गरीबी से बाहर निकल सके हैं, जिन्होंने सबसे पहले अपनी सोच और मानसिकता बदली। उन्होंने यह समझा कि गरीब होना स्थायी स्थिति नहीं है। वे समझते हैं कि यदि वे मेहनत करें, अपने हुनर को पहचानें और अवसरों का लाभ उठाएं, तो वे अपनी स्थिति को बदल सकते हैं।

आत्मविश्वास से बदलेंगे हालातः सोच के समृद्ध होने का मतलब केवल बड़े सपने देखना भर नहीं होता है। इसका मतलब है, हर चुनौती को अवसर के रूप में देखना और लगातार प्रयास करते रहना। साथ ही यह ठान लेना कि इस स्थिति से बाहर निकलना ही है। जब तक यह विश्वास नहीं होगा कि आप अपनी स्थिति बदल सकते हैं, तब तक कोई भी आपकी मदद नहीं कर पाएगा। इसलिए अपनी स्थिति सुधारने के लिए सबसे पहले मानसिकता बदलने की जरूरत है।

खुद पर विश्वास करना गरीबी से बाहर निकलने की पहली सीढ़ी है। जब आप यह मानेंगे कि आप बदलाव ला सकते हैं, तभी आप प्रयास करेंगे। ज्ञान और कौशल वह हथियार हैं, जिनसे आप किसी भी स्थिति से बाहर निकल सकते हैं। नए कौशल सीखें और अपने आप को बेहतर बनाने की दिशा में काम करें। अपनी सोच को सकारात्मक बनाएं। नकारात्मक विचारों को त्यागें और हर समस्या में समाधान ढूंढने की आदत डालें। अगर हम अपनी सोच को सकारात्मक बनाएं, अपने आप पर विश्वास रखें और अवसरों का लाभ उठाएं, तो हम गरीबी से बाहर निकल सकते हैं। *

फैशन ट्रेंड
विवेक कुमार

अगर आप ऐसी ड्रेस चाहते हैं, जो कंफर्टेबल होने के साथ-साथ आपको फैशनेबल और ट्रेंडी लुक भी दे, तो स्पोर्ट्स वियर या एथलीजर आपके लिए परफेक्ट च्वॉइस हो सकती है।

कूल फैशन का ऑप्शन एथलीजर-स्पोर्ट्स वियर

इन दिनों युवाओं में स्पोर्ट्स वियर और एथलीजर का क्रेज सिर चढ़कर बोल रहा है। स्पोर्ट्स वियर और एथलीजर वियर ऐसी ड्रेस होती हैं, जिन्हें खासतौर से स्पोर्ट्स या जिम एक्टिविटीज के लिए डिजाइन किया जाता है। मसलन जॉगर्स, ट्रैक पैंट्स, लेगिंग्स, क्रॉप टॉप्स, हूडीज, स्नीकर्स और जैकेट्स आदि। ये ड्रेसेस डेली यूज के लिहाज से भी कंफर्टेबल और स्टाइलिश होते हैं। यह फैशन आमतौर पर युवा ही कैरी करते हैं, क्योंकि इसे कैरी करने के लिए बॉडी फिटनेस और फ्लैक्सिबिलिटी बहुत जरूरी है, तभी ये बेस्ट अपीयरेंस देती है।

क्यों बढ़ रहा है क्रेजः हाल के सालों में युवाओं में फिटनेस को लेकर क्रेज बढ़ा है, ज्यादा से ज्यादा यंगस्टर्स वर्कआउट करते हैं। आज के फिटनेस फ्रीक यंगस्टर्स ऐसी ड्रेस चाहते हैं, जो कंफर्टेबल और फैशनेबल होने के साथ-साथ उनकी फिटनेस को शो-ऑफ भी करे। ये सारी क्वालिटीज उन्हें स्पोर्ट्स और एथलीजर वियर में एक साथ मिल जाती हैं। ये ड्रेस ग्लोबल और ट्रेंडी फैशन का हिस्सा हैं। चाहे बॉलीवुड या हॉलीवुड के सितारे हों, मशहूर खिलाड़ी हों, बिजनेस टाईकून हों या किसी भी क्षेत्र के कामयाब युवा हों, वे फिट और स्मार्ट दिखने के लिए आजकल स्पोर्ट्स वियर को फैशन की तरह कैरी कर रहे हैं, इसलिए भी ये ड्रेसेस युवाओं को बहुत पसंद आ रही हैं। वे खूब चाव से इन्हें पहनते हैं।

होते हैं कंफर्टेबल-मल्टीपर्पसः एथलीजर और स्पोर्ट्स वियर हल्के, कंफर्टेबल और स्ट्रेचेबल फैब्रिक से बनाए जाते हैं। ये बॉडी के लिए ब्रिथेबल (सांस लेने योग्य) होते हैं, जिस कारण इन्हें लंबे समय तक पहना जा सकता है। साथ ही ये मल्टीपर्पस और मल्टीस्टाइल होते हैं। जिम, कैजुअल आउटिंग या ऑफिस के लिए भी ये उपयुक्त समझे जाते हैं।

हर प्राइस रेंज में अवेलेबलः मार्केट में हर प्राइस रेंज में एथलीजर और स्पोर्ट्स वियर अवेलेबल हैं। डिफरेंट ब्रांड्स और क्वालिटी के हिसाब से 500 से 1500 रुपए के लोअर रेंज, 1500 से 5000 रुपए के मिड रेंज और 5000 रुपए से शुरू होने वाले हाई-एंड रेंज में आपको ये स्पोर्ट्स वियर या एथलीजर मिल जाएंगे।

जब कैरी करें स्पोर्ट्स-एथलीजरः जब भी आप एथलीजर या स्पोर्ट्स वियर कैरी करें तो फिटिंग का ध्यान जरूर रखें। अधिक लूज स्पोर्ट्स वियर अटपटे लगते हैं। ये हमेशा फिट होने चाहिए। हालांकि इतने टाइट भी न हों कि आप असहज महसूस करें। दूसरी जो बात सबसे ज्यादा ध्यान देने की है कि आपके स्पोर्ट्स वियर का मैटीरियल क्या है? वास्तव में ये स्वेट विकिंग यानी पसीना सोखने वाला होना चाहिए और ब्रीथेबल यानी सांस लेने में योग्य तो होना ही चाहिए। स्पोर्ट्स वियर को हमेशा जितना संभव हो सादगी से पहनें। ये कैजुअल आउटिंग के लिए ही ठीक हैं। कभी फॉर्मल इवेंट में इन्हें कैरी करके न जाएं।

इन बातों का भी रखें ध्यानः न्यूट्रल और मोनोक्रोम लुक्स (जैसे-ब्लैक, व्हाइट, ग्रे) वाले एथलीजर और स्पोर्ट्स वियर इन दिनों ट्रेंड में हैं। इन्हें कैरी करते समय अपने शूज का भी ध्यान रखना जरूरी है। इनके साथ आप हमेशा क्लीन और ट्रेंडी स्पोर्ट्स शूज या स्नीकर्स ही कैरी करें। स्पोर्ट्स वियर में लेयरिंग लुक भी खूब पसंद की जाती है। लेयरिंग लुक हुडीज, जैकेट्स आदि से मिलती है। लेयरिंग लुक स्पोर्ट्स वियर के साथ बेहतरीन और स्टाइलिश कॉम्बिनेशन बनाती है। जहां तक स्पोर्ट्स वियर के साथ एक्सेसरीज की बात है तो वाच, कैप या स्लिंग बैग जैसे हल्के एक्सेसरीज स्पोर्ट्स वियर को 'वॉव' लुक देते हैं। लेकिन ओवर ड्रेसिंग से बचना चाहिए। *

खास मुलाकात
पूजा सामंत

कुछ समय पहले नेटफ्लिक्स पर 'ब्लैक वारंट' वेब सीरीज रिलीज हुई है। इसमें जेलर सुनील कुमार गुप्ता के लीड रोल में जहान कपूर नजर आ रहे हैं। बीते दौर के मशहूर अभिनेता शशि कपूर के ग्रैंडसन जहान ने इस वेब सीरीज से जुड़े एक्सपीरियंस और एक्टिंग करियर से जुड़े सवालों के जवाब दिए इस बातचीत में।

मेरी पहचान वक्त के साथ आगे बढ़ेगीः जहान कपूर

जहान कपूर ने विक्रमादित्य मोटवानी के प्रोडक्शन में बनी वेब सीरीज 'ब्लैक वारंट' में जेलर सुनील कुमार गुप्ता का किरदार बहुत ही मैच्योर तरीके से निभाया है। हाल में पृथ्वी थिएटर में जहान कपूर से बातचीत हुई। पेश है इसके प्रमुख अंश-

हालिया रिलीज वेब सीरीज 'ब्लैक वारंट' में लीड एक्टर के तौर पर आपका सेलेक्शन कैसे हुआ?

'ब्लैक वारंट' की कास्टिंग मशहूर कास्टिंग डायरेक्टर मुकेश छाबरा ने की थी, उसमें मैंने भी ऑडिशन दिया। ऑडिशन के 2-3 महीने बाद मुझे विक्रमादित्य मोटवानी के ऑफिस से कॉल आया। मैं उस वक्त मकरंद देशपांडे के निर्देशन में 'सियाचिन' नाटक में मुख्य भूमिका निभा रहा था। विक्रमादित्य सर के साथ काफी बातचीत और 2-3 मीटिंग्स के बाद मुझे जेलर सुनील कुमार गुप्ता के रोल के लिए सेलेक्ट कर लिया गया।

जेलर सुनील कुमार गुप्ता का किरदार निभाने के लिए आपको किस तरह की तैयारी करनी पड़ी?

यह वेब सीरीज एक किताब 'ब्लैक वारंट : कंफेशन ऑफ ए तिहाड़ जेलर' पर आधारित है। इसे लिखा है खुद सुनील गुप्ता और सुनेत्रा चौधरी ने। मैंने सबसे पहले इस किताब को बारीकी से पढ़ा। मेरे रोल और लुक को लेकर काफी डिस्कशंस हुए। मूंछें पतली रखी जाएं या मोटी, बालों को कैसे रखा जाए, यूनिफॉर्म पहन कर कैसी चाल होगी, मेरा चलना शुरू में कैसे होगा, बाद में कैसे होगा? हर छोटी से छोटी बात पर ध्यान दिया गया। इस कहानी में मेरे किरदार के कई पहलू हैं। सुनील गुप्ता के मेंटल स्टेजेस को प्रेजेंट करना काफी मुश्किल था, किताब पढ़ने के बाद मुझे इसमें काफी हेल्प मिली। अब जब इस वेब सीरीज में मेरी एक्टिंग की खूब तारीफ हो रही है, तो बहुत अच्छा लग रहा है। इसका श्रेय मैं इस शो की पूरी टीम को दूंगा।

वेब सीरीज 'ब्लैक वारंट' के एक सीन में जहान कपूर

जेलर सुनील गुप्ता के किरदार से आप खुद को कितना रिलेट करते हैं?

यह सच है कि एक पारिवारिक संस्कारी युवक से सुनील कैसे गाली-गलौज करने वाले जेलर बन जाते हैं, कैसे कैदियों की फांसी देखते-देखते उनका दिल डेड जैसा हार्ड हो जाता है, इसे समझना बहुत मुश्किल था। जहां तक रियल लाइफ में सुनील कुमार गुप्ता के किरदार से रिलेट करने की बात है, तो मेरा फैमिली बैकग्राउंड उनसे पूरी तरह से अलग है। सिर्फ इतना कह सकता हूं कि सुनील की तरह ही मेरा स्वभाव भी सिंपल-सोबर है। मैं भी सुनील की तरह शांतिप्रिय और पॉजिटिव इंसान हूं।

क्या आपने अभिनय में आने का निर्णय इसलिए लिया क्योंकि कपूर परिवार के ज्यादातर लोग अभिनय से जुड़े रहे हैं?

यह सच है कि हमारे परिवार का लगभग हर दूसरा सदस्य एक्टिंग से जुड़ा है, लेकिन इसी वजह से मैंने भी यही राह पकड़ी ऐसा नहीं है। मेरी मां 'शोले' फेम निर्देशक रमेश सिप्पी की पुत्री शीना सिप्पी एक जानी-मानी फोटोग्राफर और पिताजी कुणाल कपूर एक्टर के साथ पृथ्वी थिएटर के एडमिनिस्ट्रेटर हैं। मुझे जब स्कूल में दाखिल किया गया तो सभी को अहसास हुआ कि मैं डिस्लेक्सिक हूं। मुझे पढ़ने में दिक्कत हो रही थी। मेरे मम्मी-पापा ने तुरंत इसका ट्रीटमेंट शुरू करवाया, तब जाकर मैं इससे बाहर निकला। इस वजह से मेरे करियर को लेकर बहुत ज्यादा प्लानिंग नहीं हुई। दसवीं क्लास के एग्जाम्स के बाद मैं पृथ्वी थिएटर से जुड़ गया। वहां बैक-स्टेज, सेट-डिजाइनिंग से लेकर प्रोडक्शन इंचार्ज तक, मुझे जो भी काम मिलता था, मैं कर लेता था। ग्रेजुएशन करने के दौरान ही मेरी मां ने मुझे एक एड एजेंसी में काम करने भेजा। मैंने इस एड एजेंसी में कॉपी राइटिंग, को-ऑर्डिनेशन से लेकर मॉडल शूट तक हर डिपार्टमेंट में काम सीखा। इन सबके बीच 'पृथ्वी थिएटर' के नाटकों में मेरा अभिनय भी चल रहा था। इसी तरह मुझे एक्टिंग से लगाव हुआ, और निर्देशक हंसल मेहता ने मुझे अपनी फिल्म 'फराज' में मौका दिया। इस तरह फिल्मों में बतौर एक्टर मैंने करियर बनाना डिसाइड कर लिया।

क्या कपूर परिवार का होने की वजह से आप प्रेशर भी फील करते हैं?

अभिनय की दुनिया में कपूर परिवार को सौ वर्ष हो चुके हैं। मैं शशि कपूर का पोता हूं। लोग आज कहते है मुझ में दादाजी (शशि कपूर) की छवि नजर आती है, यह सुनकर मुझे अच्छा लगता है, लेकिन उन्होंने जो महारत, जो मुकाम हासिल किया, क्या मैं वो क्या हासिल कर सकता हूं? पता नहीं! जाहिर-सी बात है मुझसे भी दर्शकों को कई उम्मीदें होंगी। मेरी तुलना लोग रणबीर, करीना, करिश्मा से भी करते होंगे। लेकिन इस सच्चाई को झुठलाया नहीं जा सकता कि इंसान को आगे बढ़ने के लिए टैलेंट के साथ किस्मत का साथ होना निहायत जरूरी होता है। और इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि हर किसी की किस्मत अलग ही होती है। हाथ की पांचों अंगुलियां एक समान होती हैं क्या? प्रतिभा है, पर मौके न मिलें तो प्रतिभा कैसे उजागर होगी? मैं कपूर खानदान से जुड़ा हुआ हूं, सिर्फ इसलिए घर पर बैठे-बैठे काम का इंतजार नहीं करता रहूंगा। मैं खुद कोशिशें करता रहूंगा। ऑडिशन देता रहूंगा। मुझे पूरा यकीन है कि मेरी पहचान वक्त के साथ आगे बढ़ेगी। *

घर में वे सिर्फ मेरे दादाजी थे...

अपने दादाजी (शशि कपूर) को जहान कैसे याद करते हैं, उनकी कौन सी फिल्में उन्हें पसंद हैं पूछने पर जहान बताते हैं, 'फिल्मी पर्दे पर तो वे शशि कपूर थे, द अल्टीमेट हैंडसम हीरो। लेकिन घर में मुझे प्यार करने वाले, वे सिर्फ मेरे दादाजी थे। मेरी अंगुली पकड़ कर मुझे आइसक्रीम खिलाने ले जाते थे। अकसर मुझे और मेरी सिस्टर शायरा को इंग्लिश फिल्म दिखाने ले जाते थे। बहुत सुनहरे दिन थे वो। जहां तक उनकी फेवरेट फिल्म की बात है तो दादाजी की हर फिल्म तो मैंने देखी नहीं, लेकिन 'दो और दो पांच', 'कलयुग', 'शर्मिली', 'दीवार', 'जूनून', 'आ गले लग जा' मेरी पसंदीदा फिल्में रही हैं।'